बाधाओं, विभाजनों से जूझते कदम

लड़कियों एवं लड़कों की सुरक्षा

दूसरा चरण

बाधाओं, विभाजनों से जूझते कदम

अंतिम रिपोर्ट

पुनर्वास बस्ती–मदनपुर खादर के युवाओं के लिए
दिल्ली को अधिक सुरक्षित बनाना

जागोरी
यूएन हैबिटेट, नैरोबी की साझेदारी में
दिसंबर 2010

आभार

जागोरी इस रिपोर्ट की तैयार करने के लिए सहयोग हेतु हम निम्नलिखित संगठनों के प्रति आभार व्यक्त करती हैः

यू.एन. हैबीटेट	सहायता और तकनीकी मदद के लिए सिसिलिया एंडरसन और पस्कुएल कापिजी ।
जागोरी	सुनीता धर, मधु बाला, वंदना महाजन, सुनीता रानी, एवं क्रति।
वन वर्ल्ड फाउंडेशन	गीता भारद्वाज, तेज प्रकाश एवं सतीश जिन्होंने कम्युनिटी रेडियो प्रोग्रामिंग में हमारे साथ मिलकर काम किया।
जीवनी लेखन	लोकेश शर्मा
अनहद कम्युनिकेशन	जिन्होंने फिल्म बनाने के लिए युवाओं के साथ मिलकर काम किया।
जन सुनवाई	सुरेंदर सिंह, थानाध्यक्ष, मदनपुर खादर, दिल्ली पुलिस और री एन. उस. मीना (सहायक आयुक्त) खाद्य एवं वितरण विभाग-सार्वजनिक वितरण सेवाएं, श्री अशोक अग्रवाल-वकील, दिल्ली उच्च न्यायालय, दुनु रूय-निर्देशक, हज़ार्ड सेंटर एवं दिल्ली नगर निगम (एमसीडी)।
नाट्य सहयोग	मनीष और दीपेंदर रावत जिन्होंने थियेटर में अपनी अद्भुत दक्षता से युवाओं को खुद को अभिव्यक्त करने में मदद दी।
गैर सरकारी संस्था	गूंज, सहारा, मुस्कान, एक्शन इंडिया, नेकडोर, हज़ार्ड सेंटर, मोबाइल क्रेचेज़, सीएएसपी-प्लान, दीपालय, ऑरबिंदो मैमोरियल फाउंडेशन, इताशा, अग्रगामी, न्यू एकता समिति तथा मदनपुर खादर रेजीडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन। यहां मदनपुर खादर के इन युवक-युवती कार्यकर्ताओं का आभार सबसे ज़रूरी है - रमा, गीता, ललिता, आशा, सावित्री, ऋतु, राधा, अनीता, नीलम, राहुल, अमित, विनोद, राज, ओम प्रकाश, नीरज और वीरेंद्र जिन्होंने अपने उत्साह और स्पश्ट नेतृत्व से इस बदलाव को संभव बनाया है।
मुख पृष्ठ डिज़ाइन व संयोजन	बिंदिया थापर, रत्नमंजरी, महावीर, इंद्रजीत और विनोद गुप्ता
प्रकाशन	जागोरी, बी-114, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110 017 फोनः (011) 26691219 / 26691220, हेल्पलाइनः (011) 2669 2700 फैक्सः (011) 26691221 ई-मेलः jagori@jagori.org, safedelhi@jagori.org, youthteam@jagori.org वेबसाईटः www.jagori.org
मुद्रण	सिग्नेट जी प्रेस

भाग 1
महिलाओं की सुरक्षा 1

भाग 2
युवा एवं सुरक्षा प्रयास चरण II 7

भाग 3
इस अभियान के मुख्य नतीजे और असर 28

मुख्य परिणाम 34

परिशिष्ट 37

शाहिद रमजान की तैयारी पर पत्रिका लाया

विशेष रूप से मुसलमानों का मार्गदर्शक

अंतिम रिपोर्ट

मदनपुर खादर में लड़कियों व लड़कों की सुरक्षा, दिल्ली

इस रिपोर्ट में मदनपुर खादर के सात ब्लॉकों में 2010 में जागोरी द्वारा चलाए गए 'युवा एवं सुरक्षा' अभियान के दूसरे चरण में मिली उपलब्धियों और चुनौतियों का सार-संकलन किया गया है। मदनपुर खादर दिल्ली की एक पुनर्वास कॉलोनी है जहां तकरीबन 8,000 परिवार रहते हैं। 2009 में इसी समुदाय में जेंडर और अधिकारों से जुड़े मुद्दों पर समुदाय में जागरूकता फैलाने और समुदाय व परिवारों के भीतर महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित चिंताओं को सामने लाने के लिए युवा महिला व पुरुष नेताओं के बीच काम किया गया था। मौजूदा रिपोर्ट 2009 के एक अभियान की अगली कड़ी है।

लगातार दो साल तक किए गए इस काम से जागोरी इस समुदाय के युवाओं तक पहुंचने में कामयाब रहा है और उन्हें लिए एक 'अलग तरह की परिधि' गढ़ने व हासिल करने के लिए अपने परिवेश को समझने-बूझने में मदद दी है। ये ऐसी परिधि है जिसमें युवतियां ये महसूस कर सकती हैं कि उनको निशाना नहीं बनाया जा रहा है, उनका उत्पीड़न नहीं किया जा रहा है; कि वे हिंसा और हिंसा की 'आशंका' से मुक्त जीवन के बारे में सोच सकती हैं; कि बस्ती के युवा अपने परिवारों व समुदायों के साथ मिलकर जेंडर समानता को साकार करने के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाने में योगदान दे सकते हैं क्योंकि इससे सभी युवाओं को अपने समुदाय की शक्ल-सूरत तय करने और बेहतर जीवन सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।

इस प्रक्रिया के कई चरण थे - इलाके का नक्शा तैयार करना, जिसमें महिलाओं को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा ऑडिट पद्धति से बुनियादी ढांचे की रूपरेखा व गुणवत्ता का विश्लेषण भी शामिल था; एक-दूसरे से सीखना; विवेचनात्मक समझ, नेतृतव और स्वबोध को बढ़ाना; और ये सुनिश्चित करना कि इन लोगों की आवाजें समुदाय और स्थानीय निकायों से आग मुख्य संबंधित पक्षों और फैसला लेने वालों तक भी पहुंचें ताकि वे बदलावों का सूत्रपात कर सकें।

इस कार्यक्रम के तहत कई छोटे-छोटे मगर बेहद उत्साहजनक कदम उठाए गए हैं। यहां की युवतियां और युवक बदलाव के अपने विजन के साथ व्यापक समुदाय (तकरीबन 1.5 उत्साहजनक संदेश लिखे हैं। एक-दूसरे से सीखना भी सकारात्मक ऊर्जाओं को दिशा देने और युवा नेताओं द्वारा अपने जैसे दूसरे लोगों को ये बताने की एक कारगर पद्धति थी कि वे महिलाओं के बारे में प्रचलित असंवेदनशील तौर-तरीकों को किस तरह चुनौती दे सकते हैं और जेंडर आधारित हिंसा को रोकने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं।

सुरक्षा ऑडिट के नतीजों से पता चलता है कि यहां सार्वजनिक बुनियादी ढांचे की रूपरेखा व रख-रखाव बहुत नाकाफी है। यहां पर्याप्त लाइटिंग, साफ-सुथरे सार्वजनिक शौचालयों और गंदगी व असामाजिक तत्वों से आजाद पार्कों की भारी जरूरत है ताकि महिलाएं व लड़कियां सुरक्षित महसूस कर सकें और इन सुविधाओं का आसानी से इस्तेमाल कर सकें।

इस प्रक्रिया में यहां 100 'परिवर्तनकामी' युवतियों व युवकों का एक कोर ग्रुप तैयार हुआ है। इन लोगों ने अपनी बेदखली और हाशियाकरण को समाज में आ रहे व्यापक बदलावों के साथ जोड़कर देखना और खुद अपने रवैये व व्यवहारों की पड़ताल करना शुरू कर दिया है। वे इस बात को समझने लगे हैं कि अपने अधिकारों के लिए किस तरह आवाज उठायी जा सकती है। सहभागी और प्रभावी संचार पद्धतियों के जरिए वे अपनी आवाज बुलंद करने और अपनी स्वसत्ता (एजेंसी) को व्यक्त करने में कामयाब रहे हैं।

इस अभियान ने कई संबंधित पक्षों को सक्रिय कर दिया है और सुरक्षा ऑडिट के नतीजे सामुदायिक चर्चाओं, जनसुनवाइयों और स्थानीय व राज्य स्तरीय सरकारी निकायों के साथ होने वाली एडवोकेसी, शासकीय निकायों और साझीदार स्वैच्छिक संगठनों को प्रभावित करने लगे हैं। इस प्रक्रिया से सामाजिक प्रयोगों का जो सिलसिला शुरू हुआ है उनको महिलाओं व लड़कियों की बेहतर सुरक्षा के लिए चलाए जा रहे दूसरे समुदाय केंद्रित प्रयासों में भी शामिल किया जाना चाहिए।

भाग 1

महिलाओं की सुरक्षा

पृष्ठभूमि

महिलाओं के लिए सुरक्षा का अभाव जेंडर असमानता को समाप्त करने के रास्ते में एक बहुत बड़ी चुनौती है। सुरक्षा के इस अभाव से महिलाओं की आवाजाही पर अंकुश लग जाता है और वे अपने समुदाय में बतौर नागरिक पूरी तरह आजादी से हिस्सेदारी नहीं कर पातीं। ये एक ऐसा मसला है जो दुनिया भर के शहरों की करोड़ों महिलाओं व लड़कियों को प्रभावित कर रहा है। महिलाओं की जेंडर असमानता के कारणों और प्रभावों तथा महिलाओं की सुरक्षा का अभाव, ये दोनों आपस में जुड़े हुए बहुआयामी सवाल हैं जो महिला विरोधी हिंसा, बुनियादी सेवाओं व रोजगार तक पहुंच, अच्छे अभिशासन, शहरी नियोजन, राजनीतिक सहभागिता जैसे नाना प्रकार के मुद्दों को प्रभावित करते हैं।

दिल्ली अभी भी महिलाओं के लिए असुरक्षित बनी हुई है। महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों का राष्ट्रीय औसत 14.1 प्रतिशत है जबकि दिल्ली में ऐसे अपराधों की दर 27.6 प्रतिशत दर्ज की गई है। ये हैरतगेंज आंकड़े राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) द्वारा जारी किए गए हैं। इनमें बलात्कार, दहेज हत्या, जोर-जबर्दस्ती और परिवार के भीतर यौन उत्पीड़न जैसे गंभीर अपराध भी शामिल हैं। दिल्ली के बाद आंध्र प्रदेश का स्थान आता है जहां इस तरह के 26.1 प्रतिशत अपराध दर्ज किए गए हैं। 10 लाख या उससे ज्यादा आबादी वाले देश के 35 विशाल शहरों में होने वाली बलात्कार की सारी 1693 घटनाओं में से 33.2 प्रतिशत (यानी 562) घटनाएं अकेले दिल्ली में घटती हैं। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि महिलाओं को अपहरण और अगवा कर लेने के 2409 मामलों में से भी 37.4 प्रतिशत यानी 900 मामले दिल्ली में ही होते हैं। बच्चों के विरुद्ध होने वाले अपराधों की सूची में भी दिल्ली सबसे ऊपर है। पीटीआई ने एनसीआरबी का हवाला देते हुए बताया है कि बच्चों के विरुद्ध होने वाले अपराधों का राष्ट्रीय औसत 1.4 प्रतिशत है जबकि दिल्ली में ऐसे अपराधों की संख्या 6.5 प्रतिशत है।

स्त्रोत : दि हिंदू, 4 सितंबर 2006

2010 अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष :

- सभी वर्गों की महिलाओं को अपने रोजमर्रा जीवन में उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। 15-19 वर्ष आयु वर्ग की स्कूल और कॉलेज जाने वाली लड़कियां और असंगठित क्षेत्रा की महिला कामगारों के सामने ये खतरा सबसे ज्यादा रहता है।
- यह उत्पीड़न दिन में भी होता है और रात में भी, तमाम तरह के सार्वजनिक स्थानों पर होता है जिनमें एकांत और भीड़ भरे, दोनों तरह के स्थान शामिल हैं।
- सार्वजनिक वाहन, खासतौर से बसें और और सड़कों के किनारे ऐसे स्थान है जहां महिलाओं और लड़कियों को ज्यादा यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है।
- महिलाओं ने बताया कि उन्हें सबसे ज्यादा मौखिक उत्पीड़न (छींटाकशी और फब्तियां कसना) और आंखों से उत्पीड़न (घूरना और गंदे ढंग से देखना) तथा शारीरिक उत्पीड़न (छूना/दबाना, ऊपर झुकना आदि) सबसे आम यौन उत्पीड़न रहे हैं। महिलाओं, पुरुषों और 'सामान्य प्रत्यक्षदर्शियों' की बातों से इस बात की तस्दीक हो चुकी है।
- हर तीन महिलाओं में से लगभग दो महिलाओं ने बताया कि उन्होंने पिछले एक साल में 2-5 बार यौन उत्पीड़न का सामना किया है।
- हर पांच में से तीन महिलाओं ने बताया कि उन्होंने न केवल दिन ढलने के बाद बल्कि दिन में भी यौन उत्पीड़न का सामना किया है।
- ऐसे लोगों में पुरुषों और 'सामान्य प्रत्यक्षदर्शियों' का अनुपात ज्यादा है - यानी प्रत्येक 10 उत्तरदाताओं में से लगभग 9 - जिन्होंने अंधेरा होने के बाद और दिन में महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न होते देखा है।
- खराब बुनियादी ढांचा (जिसमें खराब या अनुपस्थित स्ट्रीट लाइट्स भी शामिल हैं), इस्तेमाल के लिए अयोग्य फुटपाथ, सार्वजनिक शौचालयों का अभाव, नशीली दवाओं और शराब का खुलेआम सेवन महिलाओं की सुरक्षा के अभाव के पीछे मुख्य कारण रहे हैं।
- अपनी सुरक्षा का जिम्मा भी महिलाओं के ही ऊपर है। वे कोशिश करती हैं कि कुछ खास स्थानों पर न जाएं, शाम ढलने के बाद घर में ही रहें, खास तरह के कपड़े पहनें और मिर्च का स्प्रे और सेफ्टी पिन आदि साथ लेकर चलें ताकि अपनी हिफाजत कर सकें।
- महिलाओं की एक बड़ी संख्या, लगभग 68 प्रतिशत ने उत्पीड़न का विरोध किया है और विभिन्न प्रकार से हमलावर का सामना किया है - जैसे : पलट कर जवाब देना, परिवार और दोस्तों से मदद मांगना।
- शहरों को सुरक्षित बनाने और एक ज्यादा अनुकूल वातावरण गढ़ने में युवाओं सहित सभी आम लोगों को साझीदार और संवेदनशील बनाने के लगातार प्रयास करना जरूरी है।

जेंडर आधारित हिंसा और सुरक्षा के विश्लेषण की रूपरेखा अब हिंसा के केवल फौरी आयामों तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें बुनियादी ढांचे, नगर नियोजन और प्रशासन से संबंधित सभी आयामों का विश्लेषण किया जाने लगा है।

हालिया अध्ययनों से पता चलता है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रा दिल्ली के बहुत सारे सार्वजनिक स्थानों पर और दिन व रात के हर समय महिलाएं असुरक्षित महसूस करती हैं।

विभिन्न वर्गों, व्यवसायों की महिलाएं भीड़ भरे और एकांत, सभी तरह के स्थानों पर लगातार और विभिन्न प्रकार का यौन उत्पीड़न झेलती हैं। वे सार्वजनिक वाहनों, कारों, बाजारों, सड़कों, सार्वजनिक शौचालयों और पार्कों में यौन उत्पीड़न का सामना करती हैं। स्कूल और कॉलेज जाने वाली लड़कियों के सामने यौन उत्पीड़न का सबसे ज्यादा खतरा रहता है। उनके सामने बसों में यह खतरा खासतौर से बढ़ जाता है। दिल्ली में महिलाओं के लिए सुरक्षा के अभावों पर मचे तमाम हो-हल्ले के बावजूद महिलाएं अभी भी असुरक्षित हैं और उनके विरुद्ध होने वाले दर्जशुदा मामलों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।3 जून 2010 में जागोरी और न्यू कॉन्सेप्ट द्वारा महिला एवं बाल विकास विभाग, दिल्ली सरकार, यूनीफेम और यूएन हैबीटेट के साथ मिलकर दिल्ली के 5010 महिलाओं व पुरुषों के बीच किए गए सर्वेक्षण के नतीजों से इस बात की पुष्टि हो चुकी है।

जागोरी द्वारा किए गए एक और अध्ययन (*अंडरस्टैंडिंग वीमेन्स सेफ्टी - टुवर्ड्स ए जेंडर इन्क्लूसिव सिटी : 2009-10*) से पता चलता है कि शहरों में होने वाली जेंडर आधारित हिंसा को गरीबी, भेदभाव, बेदखली और शहरी विकास व नियोजन में जेंडर आधारित संकेतकों के अभाव का परिणाम माना जा सकता है। इसके चलते ऐसी परिधियां और संरचनाएं बनाई जाती हैं जिनमें महिलाओं और दूसरे संवेदनशील तबकों के लिए कोई जगह नहीं होती। इस अध्ययन में ये भी सामने आया कि सार्वजनिक स्थानों का स्वरूप पुरुषों के दबदबे वाला है। महिलाओं को पार्कों, बस स्टॉप्स

महिलाओं की सुरक्षा को समझना

महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित प्रयासों का मतलब ऐसी रणनीतियों, व्यवहारों व नीतियों से है जो जेंडर आधारित हिंसा (या महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा) को रोकने, महिलाओं में भय की आशंका को खत्म करने के मकसद से बनायी जाती हैं।

महिलाओं की सुरक्षा के सवाल में सुरक्षित स्थानों का सवाल भी शामिल है। कोई भी स्थान अपने आप में तटस्थ नहीं होता। अगर किसी स्थान पर भय पैदा होता है तो वहां लोगों की आवाजाही कम होती जाती है और समुदाय द्वारा उस स्थान के इस्तेमाल की संभावना घटने लगती है। आवाजाही में कमी और आरामदेह महसूस न कर पाना भी सामाजिक बेदखली को बढ़ाने वाली एक किस्म है। दूसरी तरफ कई स्थानों पर हमें सुरक्षा और सहजता का भाव मिलता है। ऐसे स्थान हिंसा को हतोत्साहित करते हैं। कहने का मतलब ये है कि सुरक्षा से जुड़े नियोजन व नीतियों में महिलाओं को शामिल करना और उनकी बारे में सोचना बहुत जरूरी है।

गरीबी से आजादी का सवाल भी महिलाओं की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। इसमें पानी का सुरक्षित इंतजाम, अनौपचारिक बस्तियों में सामुदायिक शौचालय सुविधाओं की उपस्थिति व उनका सुरक्षित होना, झुग्गी बस्तियों का स्तरोन्नयन, सड़कों व शहरों की जेंडर संवेदी रूपरेखा, कारों के लिए सुरक्षित पार्किंग, शॉपिंग सेंटर और सार्वजनिक परिवहन जैसी सुविधाएं शामिल हैं।

महिलाओं की सुरक्षा में वित्तीय सुरक्षा और स्वायत्तता का सवाल भी आ जाता है। पारिवारिक आय मारपीट को रोकने में एक अहम भूमिका अदा करती है। संसाधन जुटाना और इकट्ठा करना उत्पीड़क संबंधों से निपटने की एक केंद्रीय रणनीति होती है। इसी तरह महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण से हिंसा की परिस्थितियों के प्रति उनकी दुर्बलता में कमी आती है क्योंकि वे पुरुषों पर कम निर्भर हो जाती हैं और खुद अपने फैसले लेने की स्थिति में आ जाती हैं।

महिलाओं की सुरक्षा के सवाल में स्वाभिमान का सवाल भी शामिल होता है। अगर घर और समुदाय सुरक्षित होंगे तो महिलाओं को अपने आप को मूल्य देने, सशक्त महसूस करने, सम्मानित महसूस करने, आजाद महसूस करने, अपने अधिकारों के प्रति सम्मान महसूस करने, प्रेम किया जाना महसूस करने, अन्य परिजनों व समुदाय से एकजुटता महसूस करने और समाज में बराबर की सदस्याओं के रूप में देखे जाने का अधिकार भी मिल जाता है।

महिलाओं की सुरक्षा में ऐसी रणनीतियां व नीतियां भी आती हैं जो हिंसा होने से पहले अस्तित्व में आती हैं ताकि महिलाओं के साथ होने वाले उत्पीड़न या उनको पहुंचने वाली चोट को रोका जा सके। इसके लिए गरीबी या यौन हिंसा के स्त्रोतों से संबंधित ज्ञान व रवैयों में सुधार से मदद मिल सकती है, जैसे हिंसा को बढ़ावा देने वाले सामाजिक मूल्यों का मानना, पुरुषों की श्रेष्ठता और पुरुषों के यौन विषयक अधिकारों को बढ़ावा देने वाले रवैये और ज्ञान पर सवाल उठाना। इसके अलावा, सामुदायिक जीवन में महिलाओं और

लड़कियों की पूर्ण सहभागिता को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। स्थानीय सामुदायिक संगठनों और स्थानीय शासन के बीच साझेदारी को बढ़ाया जाना चाहिए। स्थानीय निर्णय प्रक्रियाओं में महिलाओं व लड़कियों की पूरी विविधता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। रोकथाम प्रयासों में ऐसे दीर्घकालिक, दूरगामी, समावेशी प्रयास किए जाने चाहिए जो हिंसा की आशंका और हिंसा को देखते रहने जैसे व्यवहार से संबंधित खतरों और सुरक्षात्मक कारकों को संबोधित कर सकें।

महिलाओं की सुरक्षा का मतलब है सबके लिए सुरक्षित, स्वस्थ समुदाय का निर्माण करना। यह समुदाय के तौर-तरीकों, सामाजिक मेल-जोल के ढंग, मूल्यों, रीति-रिवाजों और संस्थानों को इस तरह बदलने की प्रक्रिया है कि उससे समुदाय के सभी सदस्यों के जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार आए।

यह ऐसी कोशिशों का एक स्वाभाविक सहउत्पाद होता है जो पारिवारिक संबंधों, गरीबी, नस्लवाद और/या यौन हिंसा की रोकथाम जैसे मुद्दों को संबोधित करने का प्रयास करते हैं।

एक स्वस्थ, सुरक्षित समुदाय की रचना करना हरेक का काम है, हरेक की जिम्मेदारी है।

स्रोत : यूएन-हैबिटेट, डब्ल्यूआईसीआई एवं अन्य, 2008, 10.

आदि स्थानों पर जाने के लिए 'वाजिब वजहें', 'ढूंढनी' पड़ती हैं। इन स्थानों पर उनकी आवाजाही सुरक्षा और सामाजिक मानकों की छवियों से तय होती है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह बात भी सामने आयी कि दिल्ली में हिंसा इस कदर सामान्य बात बन चुकी है कि अब असंख्य मेहनतकश और मध्यवर्गीय महिलाओं को दिन भर में विभिन्न प्रकार के स्थानों पर किसी न किसी तरह की हिंसा और उत्पीड़न का सामना करना ही पड़ता है। दिल्ली में बुनियादी ढांचे का अभाव - जैसे महिलाओं के लिए पार्क व सुरक्षित सार्वजनिक शौचालयों, उजालेदार सड़कों, सही फुटपाथों का अभाव - गरीब इलाकों में ज्यादा गंभीर है। यह संवेदनशील तबकों की असुरक्षा व बेदखली के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण है। अध्ययन के नतीजों में इस बात पर जोर दिया गया है कि शहर और उसके विभिन्न स्थानों को नए सिरे से व्यवस्थित किया जाए ताकि दिल्ली को सही मायने में सभी नागरिकों के लिए समावेशी और हिंसामुक्त बनाया जा सके।

दिल्ली में जागोरी द्वारा अपनी तरह का पहला सेफ्टी ऑडिट किया गया है (2005, 2009 और 2010)।

इन सेफ्टी ऑडिट्स में ये बात और पुख्ता तौर पर सामने आई है कि उच्च व मध्य वर्ग की दिल्ली और गरीब तबकों की दिल्ली, दोनों के बुनियादी ढांचे में बहुत भारी फर्क है। शहर के दूर-दराज इलाकों की हालत सबसे ज्यादा खराब हैं जहां बहुत सारे लोगों को पुनर्वास दिया गया है। पुनर्वास बस्तियों में लड़कियों के बीच की गई विषय केंद्रित सामूहिक चर्चाओं (जागोरी 2009) से पता चला कि वे समुदाय में लगातार उत्पीड़न का सामना करती हैं, उन्हें सार्वजनिक वाहनों का इस्तेमाल करने में बहुत ज्यादा परेशानी होती है और अच्छा माहौल न होने के कारण उन्हें समय से पहले स्कूल से निकाल लिया जाता है।

पिछले कई सालों में जागोरी ने सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं व लड़कियों की सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने के लिए लगातार प्रयास किए हैं। पिछले एक साल के दौरान हमने ऐसे बहुत सारे सरोकारों पर एक ज्यादा व्यापक सामूहिक प्रतिक्रिया विकसित करने के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग, दिल्ली सरकार, यूनीफेम और यूएन हैबीटेट के साथ मिलकर भी काम किया है। इन प्रयासों में एक दूरगामी रूपरेखा भी तैयार की गई है जिसमें शहरी नियोजन और सार्वजनिक स्थानों के डिजाइन में नीतिगत व कार्यक्रम संबंधी सुधारों, नागरिक जागरूकता, सार्वजनिक परिवहन सुधारों और पुलिस व्यवस्था में सुधार पर जोर दिया गया है। महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा को रोकने और महिलाओं के साथ-साथ बुजुर्गों व विकलांगों आदि के लिए सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षा बढ़ाने के लिए सामुदायिक सहभागिता पर भी ध्यान दिया गया है।

भाग 2

युवा एवं सुरक्षा प्रयास चरण II

परियोजना के मुख्य आयाम और उपलब्धियां

2009 में जागोरी ने मदनपुर खादर में युवा एवं सुरक्षा पहलकदमी का पहला चरण शुरू किया था। मदनपुर खादर दिल्ली की एक पुनर्वास बस्ती है जहां जागोरी पिछले पांच साल से ज्यादा समय से काम कर रहा है। इस अभियान के दौरान जागोरी ने हाशियाई समुदायों के युवक-युवतियों को साथ लेकर मदनपुर खादर के ब्लॉक ए में रहने वाले परिवारों व समुदाय में एक सकारात्मक माहौल पैदा किया है। इस कोशिश से मिले नतीजों के आधार पर इस पुनर्वास बस्ती के दूसरे सात ब्लॉकों में भी इसी अभियान को और बड़े पैमाने पर चलाने के प्रयास किए गए।

मदनपुर खादर - दिल्ली के दक्षिण पूर्वी भाग में स्थित यह पुनर्वास बस्ती यमुना के खादर में स्थित है और यहां 2000-2003 में लोगों को पुनर्वास दिया गया था।

यह परियोजना मदनपुर खादर के सात ब्लॉकों में चलाई गई। इस अभियान में 8000 परिवारों

तक पहुंचने का प्रयास किया गया ताकि महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा को रोकने और बदलाव की समझ विकसित करने के बारे में ज्यादा से ज्यादा युवाओं को एकजुट किया जा सके।

क्र.सं.	ब्लॉक	परिवार
1.	पॉकेट ए	900
2.	ए1	1020
3.	ए2	2143
4.	बी1	1100
5.	बी2	925
6.	सी	270
7.	डी1	1900
	कुल परिवार	8258

मुख्य उपलब्धियां :

1. मानचित्राण एवं प्रशिक्षण

I. महिला सुरक्षा ऑडिट पद्धति में प्रशिक्षित युवक-युवतियों का एक संवेदनशील समूहः

मदनपुर खादर कॉलोनी के सभी सातों ब्लॉकों में सार्वजनिक व निजी स्थानों का नक्शा तैयार करने, सुरक्षा ऑडिट पैदल यात्राएं करने और जेंडर संवेदनशीलता के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा ऑडिट रिपोर्ट तैयार करने (देखें संलग्न उपकरण) के लिए 40 युवक-युवतियों की टीम को प्रशिक्षण दिया गया। सुरक्षा ऑडिट के लिए कार्यकर्ता निश्चित इलाके से पैदल गुजरते हुए ऐसे मुख्य पहलुओं का विश्लेषण करते थे जो असुरक्षा

गतिविधियां :

- **सुरक्षा ऑडिट पद्धति के बारे में प्रशिक्षण और मानचित्राण :** समुदाय की 22 लड़कियों और लड़कों की एक टीम को इस बात का प्रशिक्षण दिया गया है कि वे अपने मोहल्लों में सार्वजनिक और निजी स्थानों (पार्कों, सड़कों, जलराशियों और कूड़ेदानों वगैरह सहित) का नक्शा तैयार करें ।
- **साथी शिक्षण प्रक्रियाओं के जरिए नेतृत्व विकास के लिए दक्षता विकसित करना :** समुदाय के व्यापक नागरिक मुद्दों और समुदाय के माहौल को बदलने वाली कार्रवाइयों में युवा पीढ़ी का और गहरा जुड़ाव सुनिश्चित करना।
- **संचार रणनीति :** थियेटर, आंदोलन, रेडियो संदेश और रचनात्मक अभिव्यक्तियों के सहारे समुदाय में जेंडर समानता और सुरक्षा से संबंधित विचारों का प्रसार किया गया।
- **मुख्य संबंधित पक्षों का संवेदीकरण :** स्थानीय परिवहन व्यवस्था, राज्य विकास एवं पार्क प्रबंधन प्राधिकरण, संबंधित स्थानीय अधिकारियों, समुदाय के प्रतिनिधियों, नागर समाज और बस्ती में सक्रिय नीति निर्धारकों की सोच व चेतना में बदलाव के लिए आवाज उठाना।
- **निगरानीः** मूल्यांकन एवं दस्तावेजीकरण।

का भाव पैदा कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में निर्मित परिधियों और बुनियादी ढांचे (लाइटिंग, पेड़ों, फुटपाथों व पार्कों), पुरुषों के वर्चस्व वाले स्थानों का अध्ययन किया गया। इस बात का भी जायजा लिया गया कि पुलिस थाना, सार्वजनिक टेलीफोन बूथ, दुकानें और रेहड़ी आदि कहां हैं। उन्होंने इस बात का विश्लेषण किया कि लाइटिंग सही है या नहीं, सड़कों पर साफ दिखाई दे रहा है या नहीं, सड़कें टूटी हैं या इधर-उधर कचरा फैला हुआ है - क्योंकि ये सारे पहलू सुरक्षा के लिए एक खतरा हो सकते हैं। दिन में अलग-अलग समय और देर शाम को विभिन्न स्थानों पर पैदल यात्राएं की गईं। इन गतिविधियों में युवाओं ने इस बात का पता लगाया कि इन सार्वजनिक स्थानों पर हर रोज महिलाओं व लड़कियों को कितने जोखिम और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता होगा। इन सभी के नतीजों को संबंधित निकायों के साथ एडवोकेसी प्रयासों में इस्तेमाल किया गया ताकि वे बेहतर जेंडर संवेदी बुनियादी ढांचा, प्रणालियां और कार्यक्रम तैयार कर सकें।

II. समुदाय के सार्वजनिक स्थानों तक बेहतर पहुंच और युवतियों के आत्मविश्वास में वृद्धिः

सुरक्षा ऑडिट से पता चला कि इस बस्ती में मनोरंजन और सामाजिक मेलजोल के लिए, खासतौर से महिलाओं व लड़कियों के लिए बहुत कम सार्वजनिक स्थान उपलब्ध हैं। ऐसे स्थानों तक पहुंच को विस्तार देने की जरूरत गहरे तौर पर महसूस की गई है। जो लड़कियां/युवतियां अब तक अपने घरों की चारदीवारी में रहती थीं और/या ज्यादा से ज्यादा घर के बाहर गली में ही आ पाती थीं वे इस परियोजना के चलते अब पार्क में खेलने-कूदने लगी हैं और समुदाय में यहां-वहां आजादी से घूमने लगीं। इस परियोजना का मकसद समुदाय में सार्वजनिक स्थानों/

सुरक्षा ऑडिट के मुख्य नतीजे

मदनपुर खादर के लोगों को बहुत खराब बुनियादी ढांचे और नागरिक सुविधाओं के भारी अभाव में जीने के लिए विवश किया गया हैः

– इस इलाके में संड़कें संकरी और भीड़ भरी हैं, लाइटिंग का पूरा इंतजाम नहीं हैं, कई जगह लाइटें खराब है, भीतरी सर्विस रोड नहीं हैं, सार्वजनिक सेवाएं नाकाफी हैं, नालियों और निकासी का इंतजाम नहीं किया गया है, सार्वजनिक शौचालयों का रख–रखाव बहुत खराब है, कचरा फेंकने के स्थानों पर कचरे के ढेर लगे हुए हैं, पैदल चलने वालों के लिए अलग से जगह नहीं है, प्रदूषण है, सार्वजनिक यातायात साधन नहीं हैं (सिवाय निजी आरटीवी गाड़ियों के), सार्वजनिक वाहनों के लिए कोई निश्चित पार्किंग स्थल नहीं है, हरियाली कम है, रेहड़ी वालों के लिए कोई जगह नहीं है, महिलाओं व बच्चों के लिए कोई सार्वजनिक स्थान नहीं है।

यहां की बहुत सारी जमीन दिल्ली नगर निगम, स्लम विंग प्राधिकरण, और दिल्ली विकास प्राधिकरण के पास है जिसका कोई इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है। ये जमीन के खाली प्लॉट हैं जो मूल रूप से पार्क, समुदाय केंद्र, स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र आदि बनाने के लिए तय किए गए थे। ये सुविधाएं विकसित नहीं की गईं इसलिए जमीन के ये सारे टुकड़े खाली पड़े हैं जहां लोग जमकर कचरा फेंकते हैं। वहां जगह–जगह पानी भर जाता है। खुले में लोग वहां शौच करते हैं और कचरा फेंकते हैं।

2009 में जागोरी द्वारा किए गए एक छोटे सर्वेक्षण (इस परियोजना का पहला चरण) में पता चला कि मदनपुर खादर के 60 प्रतिशत उत्तरदाता कभी भी अपने मोहल्ले के पार्क में नहीं गए थे। 72 प्रतिशत ऐसे लोग थे जिन्होंने कभी खेल के मैदान का इस्तेमाल नहीं किया था। इससे पता चलता है कि सार्वजनिक स्थानों पर युवतियों की आवाजाही कितनी कम रही होगी।

- सुरक्षा और असुरक्षा के विभिन्न आयामों के मामले में कई लड़कियों/युवतियों की राय दिल्ली सर्वेक्षण (जागोरी 2010) के निष्कर्षों से मिलती–जुलती थी। उनका भी ये मानना था कि इलाके में सुरक्षा के अभाव के पीछे ड्रग्स का खुलेआम इस्तेमाल, सार्वजनिक शौचालयों, पार्कों, सड़क किनारे फुटपाथों पर शराबखोरी और जुएबाजी आदि मुख्य कारण हैं।

- 2009 के सुरक्षा सर्वेक्षण और मानचित्राण से पता चला कि 60 प्रतिशत से ज्यादा उत्तरदाताओं ने मदनपुर खादर के पार्कों, खेल के मैदान आदि सार्वजनिक स्थानों पर होने वाली हिंसा के बारे में सुना था। लगभग 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्होंने ऐसे स्थानों पर हिंसा/उत्पीड़न का सामना किया है।

- विषय केंद्रित सामूहिक चर्चाओं में महिलाओं और लड़कियों ने बताया कि जब वे मोहल्ले की दुकानों पर जाती हैं और सड़कों पर चलती हैं तो उन्हें लगभग रोज ही उत्पीड़न और हिंसा की आशंका से जूझना पड़ता है। जब वे बसों में चलती हैं तो उन्हें सबसे ज्यादा उत्पीड़न झेलना पड़ता है। सभी सार्वजनिक

स्थानों पर पुरुषों की भारी तादाद रहती है। वहां महिलाओं को जो असुरक्षा महसूस होती है उससे उनकी आवाजाही में भी कमी आती है।

- समुदाय में आवश्यक सेवाओं की कमी और खस्ता हालात से भी असुरक्षा की पैदा हुई है। 50 प्रतिशत से ज्यादा सार्वजनिक शौचालयों पर या तो ताला पड़ा हुआ था या वे इस्तेमाल के काबिल नहीं थे। जहां शौचालय इस्तेमाल के लायक हैं वहां भी महिलाओं को हर बार जाने के लिए 1-2 रुपए का शुल्क चुकाना पड़ता है। उन्होंने शौचालयों में और आसपास के खेतों/खुले स्थानों पर शौच के लिए जाने के दौरान पुरुषों द्वारा उत्पीड़न की बहुत सारी घटनाएं बताईं।
- लड़कियों ने मौजूदा हालात पर अपना गुस्सा और हताशा जाहिर की। इसका एक अहम कारण ये था कि उन्हें पुलिस पर भी विश्वास नहीं है। लड़कियां एक खास समय के बाद घर से नहीं निकलना चाहतीं और उनको बंदिश का सा अहसास होता है। जैसा कि एक युवक ने कहा था, ''मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूं जो उत्पीड़न करते हैं। मेरी सोच है कि महिलाओं को जहां मर्जी हो वहां जाने की छूट होनी चाहिए, उन्हें जो चाहे करने, जब चाहे करने की छूट होनी चाहिए। लेकिन मैं क्या कर सकता हूं? मैं तो सिर्फ एक इंसान हूं।''
- बस्ती में दबंगों/मवालियों की मौजूदगी से लड़कों में भी डर का भाव बना रहता है। नशीली दवाओं के खुलेआम इस्तेमाल को लड़कों ने भी एक बड़ी परेशानी बताया।
- समुदाय में सरकार द्वारा चलाई जा रही हेल्पलाइन के अभाव और समुदाय व परिवार के भीतर होने वाले तनाव व हिंसा से निपटने के लिए फौरन और कुशल प्रतिक्रियाओं को भी रेखांकित किया गया।

प्रत्येक ब्लॉक में सामने आ रही समस्याओं का विस्तृत ब्यौरा जानने के लिए संलग्न नक्शा देखें।

पार्कों को साफ-सुथरा रखने और उनको अपने इस्तेमाल में लाने की कोशिशों में समुदाय के लोगों को हिस्सेदार बनाना था। युवक युवतियों के समूह ने चौकसी की एक सामूहिक व्यवस्था विकसित की और तमाम सार्वजनिक स्थानों व नागरिक सुविधाओं पर निगरानी का इंतजाम किया ताकि उनका दुरुपयोग न किया जा सके।

इसी बीच बहुत सारी लड़कियों ने साइकिल चलाना सीखा है, वे सार्वजनिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने लगी हैं और दिल्ली के भीतर-बाहर फील्ड विजिट्स पर भी जाने लगी हैं।

साइक्लिंग : गतिशीलता में वृद्धि

मदनपुर खादर स्थित माध्यमिक स्कूल तक आने-जाने का सही इंतजाम न होने और लंबे फासले की वजह से बहुत सारी लड़कियों ने आठवीं कक्षा के बाद स्कूल छोड़ दिया था। जब लड़कियों को साइकिल मुहैया हुई तो उनमें आजादी और गतिशीलता का एक नया अहसास पैदा हुआ और वे अपने मां-बाप को इस बात का भरोसा दे पाईं कि उन्हें दोबारा पढ़ाई शुरू करनी चाहिए। जागोरी की कोशिशों से 100 से ज्यादा लड़कियां साइकिल चलाने लगीं और वे परचून आदि के लिए अपनी मांओं को भी साइकिल पर पीछे बिठा कर ले जाने लगी हैं।

III. संचार की अभिनव पद्धतियों के जरिए सुरक्षा के अहसास की पड़ताल:

यहां के युवक-युवतियों ने पार्कों की दीवारों पर 'हो हर काम में साझेदारी, ये पुरुषों की भी जिम्मेदारी' जैसे नारे और संदेश लिख दिए थे। दीवारों पर भित्तिचित्र और दीवार पत्रिकाएं निकलने लगी हैं और पुस्तकालय का दायरा भी फैला है जिससे यहां सोचने-समझने के लिए नई सृजनात्मक अवधियां और केंद्र विकसित हुए हैं जो पक्षपात, जेंडर आधारित भूमिकाओं और कायदे-कानूनों तथा पितृसत्ता के वर्चस्व को चुनौती दे रहे हैं। यहां की युवतियों ने हमारी बातें नाम से एक तिमाही दीवार पत्रिका निकाली जिसमें बाल विवाह, दहेज विरोध, घरेलू हिंसा जैसे मुद्दों पर उन्होंने अपने विचार रखे। इन दीवार पत्रिकाओं की प्रतियां बस्ती के विभिन्न इलाकों की दीवारों पर चिपका दी गई थीं और उनमें समुदाय के लोगों ने काफी दिलचस्पी दिखाई। इन लड़कियों ने खुद को, अपनी देह को बूझने के लिए नए संदेश तैयार करने के लिए सामुदायिक रेडियो, थियेटर का इस्तेमाल किया और इस तरह कई महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित किया।

2. दक्षता विकसित करना और नेतृत्व विकास:

I. साथी शिक्षा प्रक्रियाएं :

परियोजना के पहले चरण के कोर ग्रुप ने नए ब्लॉकों में दूसरे चरण में परियोजना का नेतृत्व किया। युवा नेताओं के दो समूहों - शक्ति समूह (लड़कियां) और दोस्ताना समूह (लड़के) - में 60 युवक-युवतियों ने इन जिम्मेदारियों को निभाया। उन्होंने अपने संगी-साथियों से बात की, सामुदायिक प्रयासों से अपने ज्ञान व कौशल को बांटा, उन्होंने मोहल्ला संपर्क कार्यक्रमों, पुस्तकालय सेवा, अभियानों, सुरक्षा ऑडिट, फील्ड विजिट, कौशल विकास प्रशिक्षण और मार्गदर्शन आदि के जरिए अपने ज्ञान व कौशल का आदान-प्रदान किया। जागोरी सामुदायिक टीम द्वारा मदनपुर खादर के सभी सातों ब्लॉकों में घर-घर संपर्क और इलाका संपर्क कार्यक्रमों का भी सघन अभियान चलाया गया जिसमें बस्ती के 8000 से ज्यादा परिवारों के 13-20 साल के 2500 से ज्यादा लड़के-लड़कियों से बात की गई (अधिक ब्यौरों के लिए देखें अध्याय 3)। उनके साथ सामाजिक एवं जेंडर संबंधी मुद्दों पर चर्चा की गई और सुरक्षा तथा यौन उत्पीड़न की रोकथाम से संबंधित पुस्तिकाएं बांटी गईं। ऐतिहासिक स्थानों और संग्रहालयों की फील्ड विजिट्स के जरिए वे इस बात को समझने लगे कि शहर की शक्ल-सूरत कैसे तय की जाती है और उसे किस तरह विविधतापूर्ण, समावेशी और सम्मानजनक बनाया जा सकता है। वे नागरिकता

युवाओं के साथ सामूहिक बैठकें

हर बुधवार को युवाओं की टोलियां दो घंटे की कार्यशाला के लिए जागोरी के दफ्तर में जुटती थीं। यहां वे जेंडर, मर्दानगी व यौनिकता, दहेज विरोध, शराबखोरी और घरेलू हिंसा, दलितों व अल्पसंख्यकों के अधिकारों जैसे नाना प्रकार के मुद्दों पर चर्चा करते थे।

दैहिक साक्षरता, मासिक चक्र स्वच्छता, प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य पर विशेष सत्र भी आयोजित किए गए। विकलांगता से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा की गई। नशीली दवाओं से सेहत पर असर; और अपने ऊपर अपना नियंत्रण खो देने जैसे दूसरे महत्वपूर्ण विषयों को भी उठाया गया।

थियेटर, नृत्य, आंदोलन, पोस्टर निर्माण आदि रचनात्मक पद्धतियों से ऐसे बहुत सारे मुद्दों का विश्लेषण किया गया। महिलाओं के अधिकारों और मानवाधिकारों पर कानूनी साक्षरता कार्यशालाएं भी आयोजित की गईं।

एक चित्रकला कार्यशाला में सहभागियों ने बढ़ती शराबखोरी, कच्चे घरों या कामचलाऊ घरों में रहने और अपने परिजनों के लिए बेहतर सुरक्षा से जुड़े सरोकारों को चित्रित किया। उन्होंने आसपास हरियाली और खुले स्थानों की सुरक्षा को बचाए रखने में खासतौर से दिलचस्पी जताई।

उन्होंने कंप्यूटर सीखने और कार खरीदने की भी आकांक्षाएं व्यक्त कीं।

और अभिशासन के विचारों पर भी सवाल खड़ा करने की स्थिति में आ गए हैं।

II. बेहतर आत्मविश्वास और बेहतर आत्मबोध :

सुरक्षा व उत्पीड़न से जुड़े मुद्दों की और गहरी समझदारी हासिल करने के बाद लड़कों/युवाओं ने बताया कि उन्होंने इस तरह का उत्पीड़न बंद कर दिया है। उनमें से ज्यादातर ने कहा कि अब उनके रवैये में सकारात्मक बदलाव आए हैं। मसलन - वे लड़कियों व औरतों की इज्जत करने लगे हैं, लैंगिक रूप से अपमानजनक भाषा नहीं बोलते, अपनी मांओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील हो गए हैं और घरों में अपनी बहनों की बेहतर आवाजाही व आजादी के लिए बोलने लगे हैं। दूसरी तरफ, लड़कियों ने बताया कि वे पहले से ज्यादा मजबूती से अपनी बात कह सकती हैं; वे अपने तरीके से जिंदगी जीने की सोच सकती हैं; अपने परिवार वालों का मुकाबला कर सकती हैं; अपनी इच्छा के विषयों में आगे पढ़ाई जारी रख सकती हैं; जल्दी

लड़के और युवक मर्दानगी व उसके बारे में अपनी बहुपरती समझ को बदल रहे हैं :

लड़कों के साथ काम करना वाकई चुनौती था लेकिन ये बेमतलब की कोशिश नहीं थी!

उनको साथ जोड़ने के लिए दोस्ती और समानता का संबंध कायम करना एकमात्र तरीका था।

पहले कई लड़के अपने साथ ब्लेड और चाकू लेकर चलते थे। उनके लिए लड़ाई-झगड़ा आम बात थी। उन्होंने खुद माना कि वे लड़कियों पर गंदी फब्तियां कसते थे और सीटियां बजाते थे। उन्होंने बताया कि उनको पता ही नहीं था कि ये भी एक तरह की हिंसा होती है।

इस प्रक्रिया से लड़कों को अपने व्यवहार के बारे में पुनर्विचार और विश्लेषण करने के लिए एक जगह मिली। जेंडर आधारित भेदभावों की बेहतर समझदारी के जरिए अब वे बस्ती और स्कूल में अपने यार-दोस्तों के साथ अपनी एक नई सोच के बारे में आत्मविश्वास से चर्चा करते हैं।

अब वे यहां-वहां भटकने को समय की बर्बादी मानते हैं। अब उन्होंने औरतों की इज्जत करना सीख लिया है। वे पहले से ज्यादा संवेदनशील हुए हैं और हर उम्र के लोगों से बात करने लगे हैं।

जहां तक समुदाय में बदलावों का सवाल है तो उन्होंने पाया है कि अब लड़कियों के उत्पीड़न में कमी आई है और लड़कियां अकेले ही बाहर आ-जा सकती हैं।

उन्होंने यह भी महसूस किया कि समुदाय में बेहतर चौकसी से अब कुछ सड़कें/गलियां पहले से ज्यादा साफ-सुथरी हो गई हैं। लोग कूड़ेदान में ही कूड़ा फेंकने लगे हैं।

शादी के सवाल पर मां-बाप के दबाव का विरोध कर सकती हैं और समुदाय में खुलकर अपनी बात रख सकती हैं। अब ये युवक-युवतियां एक समाधान की तलाश और घर व समुदाय में सुरक्षा व गतिशीलता की प्रचलित समझदारी के खिलाफ आवाज उठाने की कोशिशों का हिस्सा बन गए हैं।

यह सिलसिला अभी भी जारी है...। जेंडर संबंधी भूमिकाओं और पहचानों पर आधारित स्थापित तौर-तरीकों व व्यवहारों को बदलने और चुनौती देने का काम एक लगातार चलने वाली और परिवर्तनशील प्रक्रिया होती है। इस परियोजना के दौरान जो तेजी पैदा हुई है उसको आगे भी बनाए रखना होगा और इन युवक युवतियों को सीखने व सामर्थ्य हासिल करने की उनकी कोशिशों में मार्गदर्शन व मदद देनी होगी ताकि वे जेंडर से जुड़े जटिल मसलों से जूझ सकें।

III. अभियान और लोक एडवोकेसी

2010 में दिल्ली हाफ मैराथन में जागोरी टीम के

अब लड़कियों/युवतियों के सपनें भी हैं और आवाज भी

लड़कियों/युवतियों की देह भाषा, उनकी कामनाओं व आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति साफ देखी जा सकती है और वे यौवनसुलभ उत्साह के साथ अपनी बात कह सकती हैं।

आखिर में हुई समीक्षा में जब लड़कियों से कहा गया कि वे अपने नाम के साथ एक विशेषण जोड़ कर अपना नाम बताएं तो तकरीबन सभी ने सकारात्मक और सशक्तिकरण वाले विशेषण चुने : जैसे समझदार साहिस्ता, बहादुर कुसुम, संवेदनशील सिमरन, नटखट निशा, स्मार्ट सुनीता, राइट रमा, सुपरफास्ट सुनीता, इंटेलीजेंट रीना आदि...।

नेतृत्व क्षमता भी चौगुनी हो गई है : सामने आ रहे मौकों का उन्होंने बेहिचक इस्तेमाल किया है। चाहे मौके जेंडर समानता के बारे में कानूनी ज्ञान और जानकारी हासिल करने के हों; अंतर्राज्यीय आदान-प्रदान के लिए जाने का सवाल हो; साइकिल रैलियां और समुदाय में दूसरे सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए नेतृत्व का सवाल हो – उन्होंने लगातार पहल ली है। उन्होंने अपनी शर्मीली, खुद में खोई, अधिकारों व खुशियों से वंचित शख्सियत को बहुत पीछे छोड़ दिया है!

गीता और ललिता (दोनों की उम्र 17 साल), दोनों ने जागोरी के प्रयासों से दूर शिक्षा मुक्त स्कूल कार्यक्रम से 10वीं के इम्तहान पास किए हैं क्योंकि पहले उन्हें परिवार के हालात की वजह से अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी।

अब वे जागोरी द्वारा दिया जा रहा अर्द्धकानूनी प्रशिक्षण ले रही हैं ताकि समुदाय में औरतों के सामने आने वाले सामाजिक और कानूनी मुद्दों पर उन्हें मदद दे सकें। युवाओं में वे सबसे शुरुआती लड़कियां थीं जिन्होंने ये सीखने के लिए पहल की कि सुरक्षा ऑडिट कैसे किया जाता है। इसके बाद उन्होंने दूसरों को प्रशिक्षण भी दिया।

पिछले साल ललिता ने अपनी शादी की कोशिशों का घर में डटकर मुकाबला किया। घरवालों के साथ लगातार चर्चाओं के बाद अब वह जागोरी परियोजना में शोधकर्ता-कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही है।

बदलावों से सहमत फख्रमंद मां-बाप

युवाओं के मां-बाप और समुदाय के सदस्यों से खास विषयों पर की गई चर्चाओं से पता चला कि उनके बच्चों, खासतौर से लड़कियों के आत्मविश्वास और जानकारियों में बहुत तेजी से सुधार आया है।

तकरीबन सभी ने ये माना कि अब उनकी लड़कियां ज्यादा आत्मविश्वास वाली हैं, वे अकेले बाहर जा सकती हैं और समुदाय में लड़कों/युवकों से आराम से बात कर सकती हैं।

मां-बाप ने ये भी महसूस किया कि युवक-युवतियों के ज्ञान और आत्मविश्वास में इजाफा हो रहा है।

खासतौर से उन्होंने इस बात का जिक्र किया कि रेडियो कार्यक्रम बहुत शानदार कोशिश थी। वे चाहते हैं कि ये सिलसिला आगे भी जारी रहे।

मां-बाप और समुदाय द्वारा जो मुख्य मुद्दे चुने गए उनमें सीवर लाइन की जरूरत, सड़कों पर रोशनी, पार्कों में साफ-सफाई, पीने के साफ पानी, सार्वजनिक परिवहन व सार्वजनिक स्थानों पर यौन हमलों और हिंसा पर रोक लगाने की जरूरत को अहम मुद्दा बताया।

साथ इस समुदाय के 175 से ज्यादा युवक-युवतियों ने से हिस्सा लिया। इन युवक-युवतियों ने सुरक्षित और समावेशी शहरों के निर्माण और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा को रोकने की जरूरत के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए इस मैराथन में हिस्सा लिया। लोक एडवोकेसी की ये कोशिश इसलिए भी महत्वपूर्ण थी क्योंकि इससे बहुत सारे लोगों को ये समझने का मौका मिला कि महिलाओं की सुरक्षा एक ऐसा मुद्दा है जिस पर निम्न आय समुदायों के लोग भी बराबर के साझीदार हैं। मदनपुर खादर की युवतियों द्वारा मैराथन में हिस्सेदारी इसलिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि इससे उन्हें समुदाय के बाहर महिलाओं की सुरक्षा के सवालों पर अपनी व्यापक भूमिका के बारे में घरवालों से खुलकर बात करने का मौका मिला।

3. संचार रणनीतियां : सामुदायिक पहलकदमी के लिए मल्टीमीडिया और तकनीक का इस्तेमाल

I. सूचना, संचार व प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल

आईसीटी को थियेटर, दीवार लेखन और पठन क्लब जैसे परंपरागत माध्यमों और सामुदायिक रेडियो, समुदाय आधारित फिल्म निर्माण व विडियो दस्तावेजीकरण जैसे गैर-पंरपरागत माध्यमों की सामर्थ्य विकसित करने के लिए एक दूरगामी हस्तक्षेप के रूप में देखा जाता है। इतने सारे साधनों और निपुणताओं के सहारे युवाओं को अपनी ताकत और जीवन पर अपने नियंत्रण का अहसास मिला है। इन गतिविधियों में वे माध्यम भी थे और माध्य भी थे; वे निर्माता भी थे और दूसरों को प्रभावित

भी कर रहे थे, वे सर्जक भी थे और अभिनेता भी थे। इन सारी चीजों से एक ऐसा उत्साह पैदा हुआ जिसने एक प्रेक्षक और एक कार्यकर्ता की दृष्टि से विकास के मुद्दों में उनकी सक्रिय सहभागिता को आगे बढ़ाया।

युवाओं की इन टोलियों को नुक्कड़ नाटक, रेडियो स्क्रिप्ट लिखने, विडियो दस्तावेजीकरण करने, फिल्म बनाने, फोटोग्राफी करने और यू-ट्यूब पर पिक्चरें व तस्वीरें अपलोड करने का प्रशिक्षण दिया गया।

वन वर्ल्ड फाउंडेशन की सहायता से सीमित दायरे में रेडियो तकनीक और मुख्यधारा के रेडियो तंत्र, दोनों के माध्यम से एक संचार रणनीति विकसित की गई। स्कूलों में सुरक्षा, मोबाइल फोन आदि लेकर चलने जैसे अहम मुद्दों पर 15 लड़कों और लड़कियों की एक टीम को रेडियो कार्यक्रमों के निर्माण और लोक रूपों में डिजिटल कहानियां तैयार करने का प्रशिक्षण दिया गया है। उन्होंने जेंडर, सुरक्षा और अधिकारों की शब्दावली विकसित की है। उन्होंने इन चीजों के व्यापक, सीमित प्रसारण और केबल द्वारा प्रसारण को भी सीखा है। इस पहलकदमी से नौ विडियो कार्यक्रम तैयार किए गए और उन्हें प्रमुख राष्ट्रीय रेडियो एवं एफएम चैनलों पर प्रसारित किया गया। (http://edaa.in/atowsa/abouted)

60 एसएमएस संदेशों के जरिए जो फीडबैक मिला उससे इस कार्यक्रम की सफलता और सराहना का पता चलता है (देखें परिशिष्ट में फीडबैक रिपोर्ट)।

II. विडियो दस्तावेजीकरण और फिल्म निर्माण

वन वर्ल्ड फाउंडेशन ने कोर ग्रुप के 10 युवक युवतियों के लिए एक विडियो कैंप का आयोजन किया जिसमें उन्हें एडवोकेसी के लिए विडियो तकनीक और मीडिया साधनों का इस्तेमाल सिखाया गया। चार समूहों ने समुदाय में नशीली दवाओं के सेवन,

महिलाओं के स्वास्थ्य, सामुदायिक शौचालयों में सुरक्षा और यौन उत्पीड़न जैसे महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर काम किया। बाद में इसकी समीक्षा की गई और उसमें वॉइसओवर व संपादन के बाद उसे अंतिम रूप दिया गया। वन वर्ल्ड, जागोरी, संगत और अनहद मीडिया के विशेषज्ञों ने इन विडियोज़ की समीक्षा की (देखें साथ में संलग्न सीडी)। -एक नायाब कोशिश- (http://www.youtube.com/watch?v=66sqjzo7g0) नाम की एक लघु फिल्म भी अनहद मीडिया ग्रुप की तकनीकी सहायता से तैयार की गई। इसमें सुरक्षित स्कूल, सुरक्षित पानी, स्वस्थ व स्वच्छ सेवाओं, सार्वजनिक शौचालयों, सड़कों आदि की हालत पर ध्यान दिया गया था।

III. थियेटर और गतिशीलता

थियेटर अभ्यास और आवाजों में उतार-चढ़ाव का प्रशिक्षण 2009 से ही लगातार चलाई जा रही गतिविधि है। चार सप्ताह की थियेटर कार्यशालाओं के जरिए 16 युवाओं (लड़के और लड़कियों) को थियेटर के अलग-अलग आयामों का प्रशिक्षण दिया गया है। इन युवक-युवतियों को इस प्रशिक्षण से नया आत्मविश्वास मिला और वे चुप्पी की धुंध में खोए अनचिन्हे मुद्दों की भी पड़ताल करने लगे हैं। उन्होंने परिधि के विचार को खंगाला - कि किसी जगह को कैसे समावेशी और सम्मानजनक बनाया जा सकता है - उन्हें समुदाय में सम्मान और पहचान का नया अहसास मिला।

उन्होंने 8 मार्च - महिला दिवस - के मौके पर अपने नाटक आम लोगों के सामने पेश किए जिससे उन्हें समुदाय में सम्मान और पहचान का एक नया बोध मिला है। 25 नवंबर को अंतर्राष्ट्रीय महिला विरोधी हिंसा दिवस पर भी समुदाय के अलग-अलग ब्लॉकों में ये प्रस्तुतियां दी गईं।

महीने भर की कार्यशाला के दौरान तीन लघु नाटकों की पटकथा तैयार हुई जिनमें लड़कियों की सुरक्षा और महिलाओं के साथ हिंसा की रोकथाम में पुरुषों/लड़कों की भूमिका जैसे सवालों को उठाया गया था। -मेरा फैसला- नाम से एक नाटक की अंतिम रूप से तैयार पटकथा सामने आई जिसको समुदाय में अलग-अलग जगह पर मंचित किया गया।

4. मुख्य संबंधित पक्षों का संवेदीकरण

I. संपर्क और साझेदारी बनाना :

सरकारी और नागर समाज संगठनों के बहुत सारे संबंधित पक्षों के साथ सुनियोजित रूप से साझेदारियां विकसित की गईं। युवक युवतियों के अनुभवों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कई मौकों पर लोगों के साथ बांटा गया। दिल्ली सरकार की स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण एवं महिला व बाल विकास मंत्री किरण वालिया ने तीसरे अंतर्राष्ट्रीय महिला सुरक्षा सम्मेलन (नवंबर 2010) में इस बात का जिक्र किया कि जागोरी द्वारा मदनपुर खादर में युवतियों की सुरक्षा के मसले पर जबर्दस्त काम किया जा रहा है। उन्होंने यहां आ रहे बदलावों की खुलकर सराहना की।

- शिक्षा विभाग, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली सरकार की भागीदारी इकाई, दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए), दिल्ली स्लम विभाग और दिल्ली पुलिस में कई संबंधित पक्षों से सलाह

ली गई और उन्हें इस परियोजना में महिलाओं व युवाओं के नेतृत्व में चलाए जा रहे वैकल्पिक समाधानों व मुख्य मुद्दों से अवगत कराया गया। दिल्ली स्लम विंग आयुक्त को इस परियोजना की सुरक्षा ऑडिट सर्वेक्षण रिपोर्टों के साथ एडवोकेसी और संचार सामग्री भी दी गई।

- समुदाय के अनुभवों, इस अभियान की सुरक्षा ऑडिट पद्धति व उपकरणों को भी कई नागर समाज संगठनों के सामने पेश किया गया। महिलाओं के संगठन, पुरुषों के संगठन, कानूनी और मानवाधिकार संगठन और कई शहरी विकास संगठन भी शामिल थे जिनके साथ इन चीजों का आदान-प्रदान किया गया। अगस्त 2010 में जागोरी द्वारा राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में इस परियोजना के बारे में एक प्रस्तुति तैयार की गई। इसी प्रस्तुति को नवंबर 2010 में तीसरे अंतर्राष्ट्रीय महिला सुरक्षा सम्मेलन में भी पेश किया गया। लगभग 6 देशों के हाइरू कमीशन, यूएन हैबीटेट और वीमेन इन सिटीज़ इंटरनैशनल की प्रतिनिधियों ने इस परियोजना का दौरा किया और 25 नवंबर 2010 को कम्युनिटी प्रोग्राम को सार्वजनिक रूप से शुरू करने के मौके पर समुदाय व युवाओं से बातचीत की।

- जागोरी ने दिल्ली परिवहन निगम के 50 प्रशिक्षकों को भी महिलाओं की सुरक्षा के बारे में प्रशिक्षण दिया और इस परियोजना तथा पहले के अध्ययनों से निकले ऑडिट के नतीजों को उनके सामने रखा। इसके आधार पर सहभागियों को मर्दानगी के बदलते स्वरूप और संभावित बदलावों के बारे में बताया गया (http://jagori.org/training-of-dtc-instructors-safe-delhi-for-women's)।

- सामुदायिक युवा टीम जनमत निर्माण करने और इलाके में नागरिक सुविधाओं के अभाव के बारे में लोगों के भीतर चिंता पैदा करने में काफी सफल रही है। इस टीम ने स्थानीय स्तर पर तथा पुलिस, स्थानीय विधायक/पार्षद, लोक स्वास्थ्य, जल व स्वच्छता विभागों, स्थानीय परिवहन क्षेत्रा, राज्य विकास एवं नगरपालिका प्राधिकरण आदि के साथ अच्छी-खासी नेटवर्किंग की है और उन्हें विभिन्न मुद्दों के बारे में जागरूक करने और उचित कदम उठाने के लिए प्रेरित किया है। इस सिलसिले में स्थानीय पार्क प्रबंधन प्राधिकरण, संबंधित जिला अधिकारियों, बस्ती में सक्रिय सामुदायिक प्रतिनिधियों और स्थानीय समुदाय आधारित संगठनों (सीबीओ) और एनजीओ के साथ नियमित रूप से बात की गई ताकि ये सुनिश्चित किया जा सके कि जो मुद्दे उठाए जा रहे हैं उन पर उनकी जवाबदेही तय हो और वे ज्यादा जिम्मेदारी से काम करें। जागोरी ने स्थानीय विधायक/पार्षद, रेजीडेंट वेलफेयर एसोसिएशन के सदस्यों, जेंडर रिसोर्स सेंटर आदि के साथ भी अच्छे कामकाजी ताल्लुक कायम किए हैं ताकि महत्वपूर्ण मुद्दों पर उनको साथ लेकर काम किया जा सके।

- युवा टोलियों के/की सदस्यों/सदस्याओं ने स्थानीय समुदाय मुखियाओं द्वारा आयोजित लगभग 30 कार्यक्रमों और सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों में हिस्सा लिया। इन सभी युवाओं को सहभागिता

सराहना प्रमाण पत्रा मिले और पांच को पुरस्कार भी मिले।

- खादर के/की युवाओं को सीएएसपी प्लान द्वारा कंप्यूटर का भी प्रशिक्षण दिया गया। 15 साथियों को इताशा द्वारा चलाए गए व्यावसायिक एवं आजीविका कौशल प्रशिक्षण में प्रशिक्षण दिया गया और सात अन्य को स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर अग्रगामी द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

- विकास प्रयासों को गहन और समन्वित ढंग से चलाने के लिए खादर में काम कर रहे गैर-सरकारी संगठनों (गूंज, इताशा, सीएएसपी-प्लान, अग्रगामी, इफरा, सहयोग, ऑरबिंदो मेमोरियल, आग और मोबाइल क्रैचेज़) के साथ तीन नेटवर्किंग बैठकें भी आयोजित की गई।

- 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जागोरी द्वारा किए गए कार्यक्रम में समुदाय के लगभग 200 पुरुषों व महिलाओं और सभी प्रमुख स्थानीय समुदाय आधारित संगठनों (सीबीओ) और गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) ने हिस्सा लिया। नवंबर में हुई जनसुनवाई और लोक उत्सव कार्यक्रम में 600 से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया।

II. लोक नीति के लिए स्थानीय एडवोकेसी का एक उभरता मॉडलः

बेहतर नगर नियोजन और सार्वजनिक स्थानों, खासतौर से शहरी गरीबों की आबादी वाले घने इलाकों की रूपरेखा तय करने के लिए युवाओं का प्रतिनिधित्व करने में जागोरी लगातार सक्रिय रहा है।

- एक हालिया नीतिगत एडवोकेसी प्रयास में मदनपुर खादर के युवाओं ने योजना आयोग की 12वीं पंचवर्षीय योजना प्रक्रियाओं के लिए तैयार किए जा रहे ऐप्रोच पेपर के सिलसिले में हुई विषय संबंधित चर्चा में अपने मुख्य सरोकार पेश किए।

- एक और प्रयास में जागोरी ने सिटिजन फोरम - सीडब्ल्यूजी नागरिक मंच-रोजी रोटी आवास खेल - के साथ साझेदारी की है और 'मुझे भी खेलने दो अभियान' नाम से एक राज्य स्तरीय नागर समाज अभियान शुरू किया है। इस अभियान का मकसद दिल्ली में हुए राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान युवाओं के लिए एक खेल संस्कृति विकसित करना था। इस अभियान में सरकार से आह्वान किया गया कि दिल्ली के गरीब इलाकों में युवाओं के लिए खेल और विकास सुविधाओं की दीर्घकालिक योजना बनाई जाए। दिल्ली की मुख्यमंत्री को एक संयुक्त मांग पत्र सौंपा गया जिसमें युवा टीम के/की साथियों को भी प्रतिनिधित्व दिया गया था।

- 16 दिवसीय महिला विरोधी हिंसा रोकथाम अभियान के तहत 25-26 नवंबर 2010 को दो दिवसीय सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 600 से ज्यादा लड़कों और लड़कियों ने हिस्सा लिया। पहले दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम और थियेटर प्रस्तुत किया गया। ये प्रस्तुतियां युवा टोली ने ही तैयार की थीं। इसी दिन जागोरी और डब्ल्यूआईसीआई द्वारा

दिल्ली में आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षित शहर सम्मेलन की प्रतिनिधियों ने महिलाओं के साथ बातचीत की। तीसरे दिन एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें पुलिस (सुश्री गीता रानी), पुलिस उपायुक्त, दक्षिण पूर्वी दिल्ली; सामाजिक न्याय अधिकारवादी अशोक अग्रवाल; महिला मंडल सचिव, खादर, सुश्री बानो; सुश्री सुनीता रानी; घरेलू महिला कामगार समूह की सदस्य; श्री दुनू रॉय, शहरी गरीबों के अधिकारों पर कार्यरत सामाजिक कार्यकर्ता; स्थानीय राजनेता श्री मुशर्रफ; दिल्ली नगर निगम और पार्क व गार्डन सोसायटी के एक-एक सदस्यों ने भाषण दिए। इस जनसभा में समुदाय के लोगों और नागरिक प्रशासन व विधि क्रियान्वयन विभागों के बीच जवाबदेही और अधिकारों के मुद्दों पर आमने-सामने बात हुई (नीचे दिए गए ब्यौरे देखें)।

5. निगरानी, ज्ञान सृजन एवं दस्तावेजीकरण प्रक्रिया :

परियोजना की प्रक्रिया का बहुत बारीकी से दस्तावेजीकरण किया गया और युवा टीम ने रोज उसकी समीक्षा की। उन्होंने कार्यशालाओं, सभाओं की रिपोर्ट्स संभालकर रखी, पार्क और डिस्पेंसरी की मरम्मत पर नजर रखी, कूड़े की सफाई और नालियों की सफाई पर ध्यान दिया और अन्य संबंधित गतिविधियां संभालीं। एक बाहरी समीक्षक ने इस प्रक्रिया पर नजर रखी और हर महीने समय-समय पर अपना फीडबैक दिया। मासिक प्रगति रिपोर्ट बनाई गई और फील्ड एरिया में मासिक दौरे किए गए। सहभागी प्रेक्षण पद्धतियों, विषय केंद्रित सामूहिक चर्चाओं और फील्ड स्टाफ के साथ बैठकों एवं युवा नेताओं के साथ साक्षात्कारों को निगरानी उपकरणों के रूप में इस्तेमाल किया गया।

सृजनात्मक समीक्षा अभ्यास के लिए निम्नलिखित पद्धतियां अपनाई गईं:

- बदलावों और सीखों को दिखाने के लिए एक पोस्टर या कोलाज बनाना।
- एक लघु नाटिका और ऐक्ट आउट का मंचन।
- मंचित करने के लिए गीत या कविता और सुनाने के लिए एक कहानी।
- केस स्टडी के रूप में युवाओं का विवरण और साथ ही युवा नेताओं की व्यक्तिगत जीवन कहानियों को तैयार करना।
- समुदाय में प्राथमिकताओं और गतिविधियों की एक्सरसाइज तैयार करना।
- टीम, संयोजक और चुनिंदा एनजीओ साझीदारों के साथ साक्षात्कार।

सुनियोजित प्रश्नावलियों के आधार पर हुई बातचीतों के सहारे 15 युवा नेताओं के विवरण तैयार किए गए। परियोजना में हुई सभी मुख्य प्रमुख गतिविधियों का विडियो दस्तावेजीकरण किया गया। 'एक नायाब कोशिश' के नाम से 14 मिनट की एक फिल्म भी समुदाय के युवाओं ने ही तैयार की।

आकलन प्रक्रिया के मुख्य बिंदु:

- विभिन्न आकलन प्रयासों में 70 युवाओं (40 लड़कियों और 30 लड़कों) ने हिस्सा लिया। सहभागी निगरानी एवं मूल्यांकन उपकरण एक क्षमतावर्धन कार्यक्रम के जरिए तैयार किए गए और उनसे व्यक्तिगत रवैयों और तौर-तरीकों में आए बदलावों व सफलता के गुणात्मक आयामों को मापा गया।

महिला सुरक्षा की ओर बढ़ते कदम

मदनपुर खादर में सार्वजनिक सुरक्षा और नागरिक सुविधाओं के अभाव पर चर्चा के लिए एक खुला सार्वजनिक मंच, 25-26 नवंबर 2010

थोड़ा सा समय निकाल कर पढ़िए कि कानून क्या कहता है। मैं भी आपको कानूनों को पढ़ने में मदद दूंगा; आप किसी से भीख नहीं मांग रहे हैं; आप अपने हकों के लिए आवाज उठा रहे हैं

- दुनू रॉय, संयोजक, खतरा केंद्र

क्या सरकार कुछ करना चाहती है? या सरकार हमें लगातार निर्भरता की दशा में रखना चाहती है?

- मधु, यूथ प्रॉजेक्ट संयोजक, जागोरी

मैं सभी स्कूल जाने वाले बच्चों से गुजारिश करता हूं कि वे हर रोज एक महीने तक मुझे या शिक्षा विभाग को एक पोस्ट कार्ड लिखें और मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि आपके हालात में सुधार के लिए निश्चित रूप से कार्रवाई होगी।

- अशोक अग्रवाल, सामाजिक न्याय अधिकारवादी।

जब हमें दूर-दराज के ऐसे गरीब इलाकों में जीने के लिए मजबूर किया जा रहा है तो इतनी खराब नागरिक सुविधाएं क्यों हैं?

- दीपा, सदस्या, यूथ प्रोजेक्ट, जागोरी।

समुदाय के लोगों ने संबंधित नागरिक एवं कानूनी विभागों से उफनती नालियों, अपर्याप्त, टूटे और गंदे शौचालयों, सड़कों पर अंधेरे, कचरा फेंकने की खराब सुविधाओं और खस्ताहाल सड़कों के बारे में अपनी समस्याएं बताईं। महिलाओं और पुरुषों, सभी ने इलाके में सुरक्षा के हालात पर अपनी चिंताओं के बारे में उन्हें अवगत कराया। वे इस बात से भी परेशान थे कि चोरी, ड्रग्स और शराबखोरी के कारण होने वाली मारपीट व लड़ाई से बस्ती के लोगों की नाक में दम हो रखा है।

समुदाय के लोगों की इन आवाजों के जवाब में विभिन्न नागरिक एवं नगरपालिका विभागों के प्रतिनिधियों और राजनेताओं ने कहा कि इनमें से बहुत सारी चिंताएं वाकई गंभीर हैं और वे इलाके में कानून व्यवस्था की समस्या को दूर करने और नागरिक सुविधाओं को सुधारने के लिए प्रयास करेंगे ताकि ये सुविधाएं महिलाओं और लड़कियों के लिए सुरक्षित और पहुंच के भीतर हों।

- परियोजना के परिणामों को मापने के लिए तीन व्यापक संकेतक चुने गए : ज्ञान और जागरूकता निर्माण, क्षमता विकास और एडवोकेसी तथा सहभागी साधन इस्तेमाल किए गए, मसलन, रचनात्मक लेखन, चित्राकारी व कोलाज बनाना, थियेटर, साक्षात्कारों की लिस्टिंग और स्कोरिंग तथा मुख्य विषयों पर चर्चाएं। निम्नलिखित सवाल उठाए गए : सुरक्षा की समझ में आए बदलावों का आकलन; इससे जीवन पर क्या असर पड़ा है; लड़कों और लड़कियों के बीच बातचीत में बदलाव (खासतौर से लड़कियों के यौन उत्पीड़न के अनुभवों की कसौटी पर); और भौतिक बुनियादी ढांचे - पार्कों, लाइट्स एवं अन्य मूल सेवाओं के हालात में इस ऐक्टिविज्म से आए बदलाव। मुख्य कारकों और मूल्यों की समझ हासिल करने के लिए सोर (एसओएआर - शक्ति, अवसर, आकांक्षा और परिणाम) रूपरेखा का इस्तेमाल किया गया।

- इस प्रक्रिया में तीन पोस्टर कोलाज, एक लघु कहानी ('नई आशा'), एक कविता ('जागोरी में मिला ज्ञान') और दो लघु नाटिकाएं तैयार हुई। इन रचनात्मक परिणामों ने बेहतर ज्ञान और जागरूकता के आधार पर युवाओं की सोच और समझ में आए बदलावों का स्पष्ट संकेत दे दिया है। इन युवाओं की रचनात्मक अभिव्यक्तियों में आकांक्षा, इच्छाएं और एक व्यापक विश्व दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ने की चाह दिखाई देती है जहां वे खुद को सचेत और ज्ञान आधारित समाज में सक्रिय व हिस्सेदार नागरिकों के रूप में देखते हैं। आनंद, मुक्ति/आजादी, इज्जत, ज्ञान, बराबरी, हिस्सेदारी, दोस्ती और आत्मविश्वास से संबंधित शब्दों का उन्होंने सबसे ज्यादा प्रयोग किया।

- इन युवाओं की रचनात्मक अभिव्यक्तियों से सुरक्षा, जेंडर संबंधों तथा सार्वजनिक स्थानों को महिलाओं व लड़कियों के लिए अनुकूल व समावेशी बनाने के बारे में उनकी समझदारी में आए बदलावों का पता चला। जिस सहजता से युवाओं ने इन रचनात्मक उपकरणों का इस्तेमाल किया उससे पता चलता है कि इस परियोजना और उनके नए आत्मविश्वास से कितने सकारात्मक बदलाव आए हैं।

- रचनात्मक आकलन एक्सरसाइज से मुद्दों, जरूरतों और समाधानों की प्राथमिकता तय करने के मामले में लड़कों और लड़कियों के भीतर जेंडर आधारित रुझानों में गहरा फर्क दिखाई दिया। लड़कों ने परिवार में सख्त और शक्तिशाली पुरुष मुखिया की भूमिका को महत्व दिया, उन्होंने जेंडर आधारित प्रचलित गुणों को दर्शाया जबकि लड़कियों ने दब्बूपन और बिना सवाल उठाए चुपचाप जीते रहने के ऐसे गुणों को दर्शाया जो महिलाओं की विशेषता माने जाते हैं। लेकिन एक लड़की पात्र ने इस जेंडर आधारित विभाजन को चुनौती देने का फैसला लिया और एक निष्क्रिय भूमिका में खुद को दर्शाये जाने का विरोध किया। इसका मतलब है कि लड़कों में पितृसत्तात्मक और अतिमर्दवादी रवैयों की पकड़ अभी भी मजबूत है हालांकि अब वे ज्यादा जेंडर संवेदी और महिलाओं व लड़कियों के साथ परिवारों और समाज में होने वाले भेदभाव के प्रति ज्यादा जागरूक हो गए हैं। स्वतःस्फूर्त अभिव्यक्ति के क्षणों में वे अपने जेंडर आधारित पूर्वाग्रहों

युवा समूह द्वारा तैयार की गई कविता
"जागोरी में मिला ज्ञान"

जब भी मैं जागोरी में आया
हमेशा अपने को नया पाया
घर में मैंने विचार लगाया
जागोरी में मैंने उसे भिड़ाया
घर-घर की बातें हुई अनेक
जागोरी में आकर हुई एक

रेडियो प्रोग्राम चला कई महीने
सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की बातें करती बहनें
साइकिल से साइकिल हमने चलाई
एक दूसरे की हिम्मत बढ़ाई
कंप्यूटर का ज्ञान मिले
अवेयरनेस से सम्मान मिले
चिमनी के धुएं से देखो भरा हुआ आकाश
पर्यावरण का हुआ इस तरह नाश

अंधेरे से लेके निकले चिराग
गाए नए नए सबलता के राग

को और लड़कियां अपने भय और आशंकाओं को भी नहीं छुपा पाई। कहने का मतलब ये है कि जेंडर समानता और समता को बढ़ावा देने वाला वातावरण गढ़ने और बनाए रखने के लिए लगातार बहुत काम करने की जरूरत है क्योंकि व्यापक ताकतें हमेशा यथास्थिति को बनाए रखने की कोशिश करती हैं और जेंडर आधारित हिंसा की रोकथाम में लड़कों/पुरुषों को साझीदार बनने से रोकने के लिए उनके सामने वैकल्पिक रोल मॉडल भी मुहैया कराती हैं।

- संचार गतिविधियों में कौशल निर्माण प्रक्रिया एक प्रारंभिक अवस्था में है। व्यवहार में आ रहे धीमे परिवर्तनों ने लड़कों और लड़कियों के बीच बने जेंडर विभाजनों को तोड़ने में मदद दी है। लड़कों और लड़कियों के बीच दोस्तियों को स्वस्थ दृष्टि से देखा गया और उन्हें यौनिकता व जेंडर के वैषम्य या प्रभुत्वशाली मर्दानगियों के दो छोरों पर नहीं देखा गया।

समीक्षा निष्कर्षों के अंश :

यह लिस्टिंग एक लघु सामूहिक चर्चा के रूप में तय की गई थी : इस गतिविधि से निम्नलिखित बातें सामने आईं :

- सार्वजनिक स्थानों पर पुरुष क्या करते हैं और महिलाएं क्या करती हैं, इसके बीच बहुत साफ फर्क देखा गया।
- लड़कों/युवकों ने पुरुषों के ये काम सूचीबद्ध किए – चीजों की खरीद–फरोख्त, बाल मजदूरी, पढ़ाई, क्रिकेट खेलना, लूडो/बैडमिंटन, जुआ, मटरगश्ती, भद्दे इशारे करना, सीटी बजाना, जत्थे बनाकर खड़े रहना, मोबाइल पर बात करना और सिगरेट पीना या नशीली दवाइयां लेना।
- लड़कों/पुरुषों के लिए समूह द्वारा जो सबसे प्रचलित गतिविधियां चुनी गईं उनमें टोलियां बनाकर खड़े रहना, घूरना व सीटी बजाना, भद्दे फिकरे कसना और सिगरेट/शराब/नशीली दवाओं का सेवन करना आदि गतिविधियां शामिल थीं।
- सार्वजनिक स्थानों पर लड़कियों एवं महिलाओं द्वारा की जाने वाली सबसे आम गतिविधियों में घर के लिए राशन लाना, पानी के लिए सार्वजनिक नलके पर झगड़ा करना, शारीरिक श्रम करना, सब्जियां बेचना, बच्चों को स्कूल छोड़कर आना और सार्वजनिक शौचालय जाना आदि गतिविधियां शामिल थीं।

समूह ने कहा कि गतिविधियों की जिस सूची में पुरुष केवल समय बिताते, निरुद्देश्य, अनुपयोगी और मौज–मस्ती के काम करते दिखाई देते हैं वहीं महिलाओं के कामों की सूची से वे जल्दबाजी में, एक मकसद से बंधी हुई और परिवार की जिम्मेदारियों या आर्थिक उत्पादक भूमिकाओं से बंधी दिखाई देती हैं।

उपरोक्त समस्याओं के समाधान सुझाने में लड़कियों और लड़कों के बीच इस बात पर एक राय थी कि महिलाओं व लड़कियों के लिए और ज्यादा शौचालय बनाए जाने चाहिए। इसके अलावा मौजूदा शौचालयों की मरम्मत व रख–रखाव और उनके इस्तेमाल की बेहतर सुविधा पर भी जोर दिया गया।

घटते महत्व के क्रम में उन्होंने सबके लिए कानून व्यवस्था और सुरक्षा बनाए रखने में पुलिस की बेहतर उपस्थिति को भी एक महत्वपूर्ण समाधान माना। इसके बाद लड़कों ने स्वनियमन का एक तरीका यह भी बताया कि उन्हें सड़क किनारे बेवजह नहीं खड़े रहना चाहिए।

सुरक्षा उपायों की सूची में तीसरे स्थान पर ये था कि लोक शिक्षा और यौन उत्पीड़न विरोधी फिल्मों और नुक्कड़ नाटक आदि जनसंचार माध्यमों के जरिए लोगों की जागरूकता बढ़ाई जाए।

स्रोत : समीक्षा के निष्कर्ष, जागोरी 2010

भाग 3

इस अभियान के मुख्य नतीजे और असर

प्रस्तुत भाग में इस परियोजना के मुख्य नतीजों और परिणामों की रूपरेखा दी गई है। परियोजना के परिणामों की मात्रात्मक माप के लिए निम्नलिखित कसौटियों का इस्तेमाल किया गया:

1. **जागरूकता और संवेदीकरण :** युवा टोली ने समुदाय में बहुत सारे जेंडर समानता और सुरक्षा संबंधी संदेश दिए; बहुत सारे युवक युवतियां समुदाय के लोगों में गए, मुख्य संबंधित पक्षों के संवेदीकरण के लिए कई कोशिशें शुरू की गई।

2. **क्षमतावर्धन :** बहुत सारे युवा नेताओं को सुरक्षा ऑडिट पद्धति का प्रशिक्षण दिया गया। बहुत सारे युवाओं को थियेटर, कम्युनिटी रेडियो, फिल्म निर्माण और विडियो दस्तावेजीकरण का प्रशिक्षण दिया गया।

3. **एडवोकेसी :** समुदाय के संबंधित पक्षों, दूसरे गैर-सरकारी संगठनों और संबंधित सरकारी निकायों द्वारा सुरक्षा, स्वास्थ्य और जेंडर आधारित हिंसा पर कई प्रयास शुरू किए गए; नीति संबंधी एडवोकेसी के प्रयास शुरू किए गए और सरकारी कार्यक्रमों व सेवाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिए प्रयास किए गए।

मुख्य परिणाम : जैसा कि नीचे दी गई टेबल से पता चलता है, ये एक सघन प्रक्रिया थी जिसमें कई शैक्षिक, गोलबंदी एवं अन्य सत्र आयोजित किए गए।

गतिविधियां	कितने युवाओं से संपर्क हुआ	12-21 वर्ष के लड़के	12-21 वर्ष की लड़कियां	मुख्य उपलब्धियां	क्या दस्तोवज, ए.वी. संचार उपकरण एवं रिपोर्ट तैयार हुई
जागरूकता एवं संवेदनशीलता निर्माण					
क्षेत्र संपर्क एवं आउटरीच	2500	750	750	बस्ती के सभी सात ब्लॉकों को सफलतापूर्वक कवर किया गया	
गली/नुक्कड़ सभाएं	137	-	137	घर-घर जाकर खासतौर से लड़कियों/युवतियों से संपर्क और मोबिलाइजेशन का काम हुआ। लड़कियों के अनौपचारिक मोहल्ला समूह बने। हर मुलाकात दो घंटे की थी और इसमें परिवार में हिंसा, सड़कों पर यौन उत्पीड़न और सशक्तिकरण से संबंधित किताबों को पढ़ने आदि के सत्र व चर्चाएं होती थीं।	मासिक निगरानी रिपोर्ट्स
पुस्तकालय	550			250 से अधिक किताबें, अखबार, चित्र कहानी पुस्तकें, शास्त्रीय भारतीय साहित्य एवं कविताओं की किताबों को पढ़ा गया औरयौनिकता, स्वास्थ्य व जेंडर से जुड़े मुद्दों से संबंधित सूचनाप्रद पुस्तकों व सामग्री का वितरण किया गया।	

गतिविधियां	कितने युवाओं से संपर्क हुआ	12-21 वर्ष के लड़के	12-21 वर्ष की लड़कियां	मुख्य उपलब्धियां	क्या दस्तोवज, ए.वी. संचार उपकरण एवं रिपोर्ट तैयार हुई
क्षमता विकास					
साइक्लिंग	112	-	112	112 लड़कियों ने पहली बार साइकिल चलाना सीखा जिससे उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर अपनी उपस्थिति बनाने में मदद मिली और उनका आत्मविश्वास बढ़ा।	मासिक साइक्लिंग लॉग पुस्तिका
रेडियो स्क्रिप्ट्स और सामुदायिक रेडियो कार्यक्रम की तैयारी	15	7	8	युवा समूह के सदस्यों ने राष्ट्रीय रेडियो चैनल, रेनबो एफएम के लिए स्क्रिप्ट तैयार की। उनमें से पांच ने महिलाओं एवं सुरक्षा के सवाल पर रेडियो स्टेशन जाकर लाइव कार्यक्रम चलाया। रेडियो प्रोग्रामिंग की निपुणता विकसित करने के लिए 11 सत्र चलाए गए।	समेकित प्रक्रिया रिपोर्ट - वन वर्ल्ड फाउंडेशन; रेडियो स्क्रिप्ट का सीडी रॉम; रेडियो चैनल द्वारा भेजी एसएमएस फीडबैक रिपोर्ट
थियेटर एवं गतिशीलता	14	6	8	थियेटर के जानकारों द्वारा जेंडर संबंधी कई मुद्दों पर 38 सत्र आयोजित किए गए। एक नुक्कड़ नाटक की पटकथा (21 मिनट) तैयार की गई और समुदाय में 'मेरा फैसला' नामक नाटक के दो मंचन किए गए।	थियेटर कार्यशाला रिपोर्ट का समेकन; थियेटर प्रस्तुति 'मेरा फैसला' की सजिल्द पटकथा

गतिविधियां	कितने युवाओं से संपर्क हुआ	12-21 वर्ष के लड़के	12-21 वर्ष की लड़कियां	मुख्य उपलब्धियां	क्या दस्तोवज, ए.वी. संचार उपकरण एवं रिपोर्ट तैयार हुई
जेंडर संवेदीकरण कार्यशालाएं	291	100	191	इस दौरान 35 कार्यशालाएं की गईं जिनमें बहुल पहचानों, शहरी गरीबों, जेंडर व यौनिकता, दैहिक नियंत्रण, मासिक चक्र स्वास्थ्य, एचआईवी तथा नशीली दवाओं जैसे कई मुद्दे उठाए गए और संसद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का अभियान चलाया गया।	मासिक निगरानी रिपोर्ट्स
फिल्म निर्माण	15	6	9	युवाओं ने फिल्म का विचार तैयार किया, 14 मिनट के फिल्म की पटकथा तैयार की जिसमें महिलाओं व लड़कियों की सुरक्षा, गरीबी, शहरी समुदायों के समावेश व सशक्तिकरण से संबंधित मुद्दों को उठाया गया था। यह काम वन वर्ल्ड फाउंडेशन और अनहद मीडिया की मदद से हुआ जिसके फलस्वरूप 'एक नायाब कोशिश' फिल्म तैयार हुई।	फिल्म की सीडी

गतिविधियां	कितने युवाओं से संपर्क हुआ	12-21 वर्ष के लड़के	12-21 वर्ष की लड़कियां	मुख्य उपलब्धियां	क्या दस्तोवज, ए.वी. संचार उपकरण एवं रिपोर्ट तैयार हुई
सुरक्षा ऑडिट और मानचित्रण	37			7 ब्लॉक में 8 सुरक्षा ऑडिट पैदल यात्राएं की गईं। एक वास्तु विशेषज्ञ के साथ पांच प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए और 8 मोहल्ला नक्शे बनाए गए।	सुरक्षा ऑडिट रिपोर्ट्स और छपे हुए नक्शे
नेतृत्व विकास	60	20	40	इस प्रक्रिया से साथी शिक्षकों और प्रेरकों का एक कोर ग्रुप तैयार हुआ है जिसके पास सामुदायिक मोबिलाइजेशन और संचार के उचित साधन व पद्धतियां हैं।	15 साथी शिक्षकों की केस स्टडीज तैयार की गई ताकि नेतृत्व विकास के लिए उनको प्रेरक उदाहरणों के रूप में पेश किया जा सके।

गतिविधियां	कितने युवाओं से संपर्क हुआ	12-21 वर्ष के लड़के	12-21 वर्ष की लड़कियां	मुख्य उपलब्धियां	क्या दस्तोवज, ए.वी. संचार उपकरण एवं रिपोर्ट तैयार हुई
एडवोकेसी और साझेदारी निर्माण					
नेटवर्किंग और एडवोकेसी	15			''मुझे भी खेलना है'' नामक नागर समाज एडवोकेसी अभियान में हिस्सा लिया गया। ये अभियान राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान चलाया गया था। नवंबर में समुदाय के लोगों, सरकारी निकायों के प्रतिनिधियों और 300 से ज्यादा लोगों, समुदाय के मुखियाओं, पुलिसकर्मियों और जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में एक सामुदायिक जनसुनवाई का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बुनियादी सेवाओं और अधिकारों व सुरक्षा से जुड़े मुद्दे उठाए गए। युवाओं के नेतृत्व में समुदाय में 8 मार्च के कार्यक्रम का आयोजन किया गया।	हरियाली और पार्कों में सुधार सहित वंचित तबकों के विभिन्न मुद्दों की तरफ मुख्यमंत्री का ध्यान आकर्षित कराने के लिए एनजीओ प्लेटफार्म की ओर से एक मांगपत्र दिया गया। जनसुनवाई की एक रिपोर्ट

मुख्य परिणाम

यह अभियान दिल्ली में महिलाओं व लड़कियों के लिए सुरक्षित व समावेशी शहर की रचना के लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए एक सुगम और अनुकूल वातावरण बनाने में कारगर रहा है। इस परियोजना से आम लोगों, खासतौर से दिल्ली की एक शहरी गरीब बस्ती के युवाओं को संगठित करने में काफी कामयाबी मिली है।

एक दूसरे से सीखने की पद्धति काफी कारगर रही और लड़कियों व लड़कों ने सुरक्षा व समावेशन की कसौटी पर जेंडर भूमिकाओं व संबंधों के बरक्स हाशियाकरण और भेदभाव के मुद्दों का विश्लेषण सीखा है। उन्हें सार्वजनिक मंचों पर अपने मुद्दे व्यक्त करने का आत्मविश्वास मिला है और उन्होंने यह दिखा दिया है कि वे व्यक्तिगत स्तर पर भी इन मुद्दों से निपट सकते हैं।

इस परियोजना से समुदाय में निम्नलिखित के बारे में जागरूकता पैदा हुई है :

- शहर में सुरक्षा के अपने अधिकार की बेहतर समझ; जोखिम लेने की इच्छा और सार्वजनिक स्थानों पर जाने की ज्यादा इच्छा; एक ऐसे शहर के अधिकार की चाह जिसको वे खुद तय कर सकते हैं, जिसमें वे हिस्सा ले सकते हैं और नागरिकता का बोध अर्जित कर सकते हैं।

- 100 से ज्यादा युवाओं की एक परिवर्तनकामी टोली विकसित हुई है। इन लोगों ने सीखने और सोचने, समतापरक और अहिंसक संबंधों के लिए बात करने की प्रक्रिया शुरू की है। उनकी अधिकार आधारित सोच को गहराई देना और महिलाओं व लड़कियों के सामने समुदाय में होने वाले यौन उत्पीड़न व हिंसा को रोकने में मदद मिली है।

- बहुत सारे युवाओं/पुरुषों ने संकल्प लिया कि वे जेंडर भेदभाव आधारित गंदी भाषा का इस्तेमाल नहीं करेंगे, अपनी मांओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील और समझदारी का बर्ताव करेंगे और अपनी बहनों की आवाजाही और बोलने की आजादी को बढ़ावा देंगे।

- लड़कियों/युवतियों को अब सड़कों पर यौन उत्पीड़न के खिलाफ और अपने परिवारों में हिंसा के खिलाफ बोलने और उनका सामना करने की ज्यादा ताकत है।

- सामुदायिक जागरूकता में इजाफा हुआ है और ये बात इस बारे में होने वाली चर्चाओं और तर्कों से दिखाई देती है। अब चुप्पी टूट रही है और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के मुद्दों को छुपाने का दबाव नहीं है।

- बढ़ते शहरीकरण के माहौल में इस परियोजना के प्रयास समुदाय में उदासनीता और उपेक्षा के मुद्दों की तरफ नीति निर्माताओं का ध्यान खींचने में कारगर रहे हैं और बहुत सारे निकायों को जेंडर संवेदी बुनियादी ढांचा, कार्यक्रमों और राजनीतिक बदलाव के लिए साझेदारी की शुरुआत करने को प्रेरित किया है।

निष्कर्षः

मदनपुर खादर में जेंडर आधारित हिंसा, यौन उत्पीड़न और महिला अनुकूल परिधियों का विकास करने के लिए युवाओं और महिलाओं की जागरूकता बढ़ाने में जबर्दस्त कामयाबी मिली है। बाधाओं को पार करने और लैंगिक विभाजनों को तोड़ने के लिए बहुआयामी परियोजना रणनीतियों के जरिए नाना प्रकार के लोगों तक पहुंचने में कामयाबी मिली है। इस पहलकदमी से बेहतर शहरी नियोजन, सार्वजनिक व नागरिक सेवाओं तक बेहतर पहुंच, खासतौर से घनी आबादी वाली पुनर्वास बस्तियों में सुधार के लिए समुदाय के नेतृत्व पर आधारित प्रक्रियाओं का रास्ता खुला है। इस सफर में जो दृष्टि विकसित हुई है उसके आधार पर अभी भी सामुदायिक स्तर पर मर्दानगी और नारीत्व के प्रचलित पूर्वाग्रहों से निपटने के लिए ज्यादा गहन, दीर्घकालिक, सूक्ष्म और समग्र हस्तक्षेपों की जरूरत बनी हुई है। अभी भी स्थानीय स्तर पर विभिन्न संस्थागत प्रयासों में काफी सामूहिक संगठनीकरण और समन्वय की आवश्यकता है। इसके लिए समुदाय को एक दीर्घकालिक दृष्टि और योजना विकसित करनी होगी और स्थानीय शासन संरचनाओं को सुदृढ़ करना होगा।

समुदाय और युवाओं ने बार-बार इस बात का जिक्र किया कि दिल्ली बेदखली पर आधारित शहर है लेकिन अपनी सीमाओं को उन्होंने बार-बार गरीबी और अवसरों के अभाव से जोड़ कर देखा। दिन रात हर समय महिलाओं और लड़कियों को हिंसा का अनुभव जितना 'सामान्य' लगने लगा है वह बहुत डराने वाली बात है।ये इस बात का संकेत भी है कि समुदाय और शहरी परिधियों की रूपरेखा कितनी दोषपूर्ण है और शासकीय संस्थान कितने कम जेंडर संवेदनशील है (जागोरी जीआईसी रिपोर्ट 2010)।

यहां की लड़कियों और युवतियों के अनुभवों से जो बातें सामने आई हैं उनमें न केवल हिंसा का भय महत्वपूर्ण है बल्कि वे उन संस्थाओं से बेदखल और उन संस्थाओं के प्रति सशंकित भी दिखाई देती हैं जिनसे उनको सुरक्षा मिलनी चाहिए। दिल्ली को एक 'विश्वस्तरीय शहर' बनाने की कोशिशों ने उनकी जिंदगी को और ज्यादा असुरक्षित बना दिया है क्योंकि अब सुविधाओं को खास क्षेत्रों में ही केंद्रित किया जा रहा है और उनका इलाका निश्चित रूप से उपेक्षित है।

समुदाय में किए गए ऑडिट से बहुत सारे ऐसे पहलू भी सामने आए जो महिलाओं व लड़कियों के लिए ज्यादा सुरक्षित परिधियां रचने में महत्वपूर्ण होती हैं। मसलन, सड़कों, बस स्टॉप, पार्कों और सार्वजनिक शौचालयों जैसे सार्वजनिक स्थानों का बेहतर नियोजन और रूपरेखा। यहां की सिफारिशों में सही लाइटिंग का इंतजाम, फुटपाथों की बेहतर बनावट, फेरीवालों की उपस्थिति और उनके लिए तय जगहों की व्यवस्था और पुरुषों और महिलाओं के लिए अच्छी तरह बनाए गए सार्वजनिक शौचालयों की जरूरत बार-बार दिखाई दी। महिलाओं के लिए सार्वजनिक शौचालयों के भयानक अभाव और समुदाय में मौजूद शौचालयों की भयानक स्थिति न केवल इस समुदाय में बल्कि शहर में भी इस तरह की सेवाओं की दशा का बहुत स्पष्ट संकेत है।

जागोरी के अध्ययनों के नतीजों ने ये स्पष्ट कर दिया है कि महिलाओं की सुरक्षा व समावेशन के मुद्दे को संबोधित करने के लिए बहुत सारे

कार्यक्रमों व हस्तक्षेपों की जरूरत है - जैसे शहरी रूपरेखा व नियोजन, सेवाओं की उपस्थिति, पुलिस व विधि क्रियान्वयन तंत्र, सामुदायिक हिस्सेदारी व पुरुषों की जागरूकता, महिलाओं व युवाओं में जागरूकता आदि। महिलाओं व लड़कियों के लिए सुरक्षित शहरों के निर्माण की योजना से स्थानीय व राष्ट्रीय सरकारों, सेवा प्रदाताओं, पुलिस, शिक्षकों व समुदायों सहित नाना संबंधित पक्षों के एजेंडा पर इस जरूरत को रखा जाना चाहिए। शोधों से ये बात साफ हो चुकी है कि इस संदर्भ में बहुत सारे मुद्दे आपस में जुड़े हुए हैं और इसके लिए बहुआयामी और दीर्घकालिक रणनीति की जरूरत है।

जागोरी एवं महिला व बाल विकास विभाग, दिल्ली सरकार द्वारा चलाया गया सुरक्षित दिल्ली अभियान यूनीफेम और यूएन हैबीटेट की साझेदारी में संपन्न हुआ है और इसमें लघु, मध्यम एवं दीर्घकालिक हस्तक्षेपों के लिए सात क्षेत्र चुने गए हैं :

- शहरी नियोजन एवं सार्वजनिक स्थानों की रूपरेखा
- सार्वजनिक ढांचे और सेवाओं की व्यवस्था व रखरखाव
- सार्वजनिक परिवहन
- पुलिस व्यवस्था
- कानून, न्याय एवं पीड़ितों की सहायता
- शिक्षा
- नागरिक जागरूकता एवं सहभागिता

समुदाय में किए गए इस प्रयास के नतीजे और अन्य शोधों व आंकड़ों से सरकारी व नागर समाज संगठनों, सभी संबंधित पक्षों के साथ योजना कार्यक्रमों और साझेदारियों में मदद मिलेगी जिससे महिलाओं की सुरक्षा और जेंडर समावेशन का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

साहिस्ता खान

उम्र : 17 साल

शिक्षा : आर्ट्स विषय में 11वीं की पढ़ाई कर रही है

जाति : शैख अब्बासी

पता : बी-2/456, जे.जे कॉलोनी मदनपुर खादर

सहिस्ता अपने माता-पिता 3 बहनों, भाई एक भाभी व उनके दो बच्चों के साथ रहती हैं। भाई अपने बीबी बच्चों को छोड़कर चला गया है। सारे परिवार के खर्च चलाने की जिम्मेदारी सहिस्ता के पिता की है। पिता बेलदारी करते है और कोई नियमित आदमनी नहीं है। बदायूँ से दिल्ली के अलखनंदा में आकर बसे सहिस्ता के परिवार को भी वहाँ से उजाड़ कर मदनपुर खादर भेज दिया गया था।

सहिस्ता मदन पुर खादर के माहौल को लड़कियों के लिए बहुत ही असुरक्षित मानती है, साथ ही उनको सबसे बड़ी दिक्कत यह लगती है कि महिलाओ व लड़कियों को घर से बाहर नहीं जाने देते, और मुस्लिम परिवारों में उनके अनुसार यह और भी ज्यादा है। सहिस्ता बताती है कि मैंने एक लड़की और उसकी माँ से जागोरी की लाइब्रेरी में आने की बात कही तो माँ ने कहा कि नहीं हम लड़कियों को इतनी दूर नहीं भेजते जबकि उनका घर सेन्टर से सिर्फ एक ब्लाक की दूरी पर है। सहिस्ता के अनुसार अगर लड़के छेड़ना व यौन हिंसा करना बंद कर दे तो सब ठीक हो जाएगा। अपने स्कूल में दूसरी लड़कियों के पास जागोरी की किताबे देखकर और पढ़कर आकर्षित हुई। सहिस्ता पिछले 6-7 महीनों से सेन्टर की लाइब्रेरी से जुड़ी हुई है।

सहिस्ता ने सुरक्षा ऑडिट, मीटिंगों आदि में भी हिस्सेदारी ली है पर उन्हें सबसे ज्यादा मजा जागोरी की किताबों में आता है। सहिस्ता का कहना है कि यहाँ की किताबों में बड़े मजेदार तरीके से, चुटकलों और व्यग्यों के जरिए हमारे समाज की समस्याओं से रूबरू कराया गया है।

सहिस्ता को जागोरी के काम का सबसे प्रभावशाली हिस्सा यह लगता है कि यहाँ पर अत्याचारों के बारे में तो बताया ही जाता है, साथ ही उनसे कैसे लड़ा जाए या बचा जाए उन तरीकों पर भी रोशनी डाली जाती है।

साहिस्ता मानती है कि इन अत्याचारों से खिलाफ लड़ाई लड़ने की जरूरत है ताकि हम भी अपनी मर्जी की जिन्दगी जी सके। लेकिन यह अकेले नहीं किया जा सकता। अगर हम सब लड़किया मिलकर सोचे और काम करे तो अपने इलाके में तो बदलाव ला ही सकते है। इस लड़ाई में वह जागोरी जैसे संस्था की भूमिका को महत्वपूर्ण मानती है। सहिस्ता का मानना है कि यहाँ के युवाओं के अन्दर इन अत्याचारों के प्रति एक नया नज़रिया विकसित हुआ है। सहिस्ता भविष्य में अपने जीवन साथी के तौर पर एक ऐसे इंसान की चाहत रखती है जो उन्हें घर से बाहर निकलकर काम करने से न रोके और घर की जिम्मेदारियों में भी उनका साथ दे।

सावित्री उर्फ आरती

उम्र : 15 साल

शिक्षा : आर्ट्स से 11वीं की पढ़ाई कर रही है

जाति : बेरवा

पता : मकान न.-1548, फेस-II, जे.जे. कालोनी, मदनपुर खादर

सावित्री को यह नाम पसन्द नहीं हैं इसलिए उन्होंने अपना नाम आरती रख लिया है, यहाँ हम आरती के नाम से ही उनके बारे में जानकारी रखेगें। आरती अपने माता-पिता और दो भाइयों के साथ रहती है। माँ घर संभालती है और पिता निर्माण मजदूर है (मिस्त्री) घर की कोई नियमित आय नहीं है। बड़े भाई ने दसवीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी और अभी कुछ नही करता। छोटा भाई सांतवी में पढ़ता है। मूलतः राजस्थान का रहने वाला आरती का परिवार दिल्ली की आर के पुरम बस्ती से उजाड़ कर यहाँ भेज दिया गया था।

मदनपुर खादर के बारे में आरती को समस्याएँ ही ज्यादा नजर आती है। आरती के मुताबिक यहाँ का माहौल असुरक्षित है और सामाजिक सुरक्षा की आधारभूत जरूरतें भी इस इलाके में नहीं है-जैसे कुड़ेदान, अस्पताल, खेलने लायक पार्क, नजदीक में स्कूल। जो सार्वजनिक शौचालय यहाँ बने है, वह यहां की जनसंख्या के अनुपात में कम तो है ही साथ ही ज्यादातर खराब रहते है और लड़कियों/महिलाओं के लिए असुरक्षित भी है। डर से लड़कियां अकेले शौच के लिए भी नहीं जाती।

आरती को खेलने का बहुत शौक है वह अपने स्कूल की खो-खो टीम की कप्तान है। लेकिन उनके इलाके में अपने इस शौक को पूरा करने के लिए प्रर्याप्त स्थान न होने का उन्हें बहुत अफसोस है। क्योंकि जो भी पार्क है वह या तो कुड़ेदानों में तब्दील है या फिर पुरूषों के जुएखाने बने है। पिछले 4 सालों में जागोरी के साथ जुड़कर आरती व उनके युवा साथियों ने कुछ पार्कों की सफाई की और पेड़ लगाए ताकि वह उनमें खेल सके। लेकिन वहाँ भी ज्यादातर लड़के क्रिकेट खेलते है और लड़कियों को ज्यादातर अपनी गलियों में ही खेलना पड़ता है। अपने इलाके की समस्याओं में से आरती को सबसे ज्यादा गुस्सा जिन पर आता वह है -शराब पीकर पुरूषों का अपनी पत्नियों को मारना। आरती कहती है- हमारे समाज में पुरूष औरतों को अपने तरीके /मर्जी से चलाना चाहते है। अपने घर की औरतों को घरों में बंद करके और दूसरी औरतों को बुरी नजरों से देखकर अपने कंट्रोल में रखना चाहते है। इससे मुझे बहुत चिढ़ लगती है। इन चार सालों में जागोरी के साथ जुड़ने पर आरती को जो सबसे अच्छा लगा वह है उनकी बाहर निकलने की आजादी। पहले आरती की माँ आरती को कहीं अकेले घर से बाहर नहीं भेजती थी लेकिन जागोरी के इस इलाके में काम से आज वह उसे कहीं भी जाने देती है।

हाजिरजवाब आरती बताती है कि पहले जब कोई उन्हें छेड़ता था तो वह पलट कर जवाब नहीं देती थी लेकिन जागोरी में कई चर्चाओं से उनकी समझ साफ हुई कि हिंसा को चुपचाप सहना भी हिंसा को बढ़ाना है तो अब आरती के अंदर का यह डर खत्म हुआ है और अब वह छेड़खानी करने वालों को तबाक से जवाब देती है और उनकी बोलती बंद करवा देती है।

बहुत विश्वास के साथ आरती कहती है कि मैं इतनी आत्मनिर्भर हो चुकी हूँ कि अगर भविष्य में मेरे ससुराल वाले मुझे तंग करेंगे तो मैं दबी सहमी नहीं रहूँगी, मैं अपनी शर्तो पर अपनी जिन्दगी जी सकती हूं।

आरती अपनी पढ़ाई पूरी करके पुलिस अफसर बनना चाहता है। साथ ही उनको लगता है कि जागोरी को अपनी यह मुहिम जारी रखनी चाहिए ताकि आने वाले भविष्य में भी लड़कियों की समझ विकसित हो और वह अपने अधिकारों के लिए लड़ सकें।

अजरूद्दीन

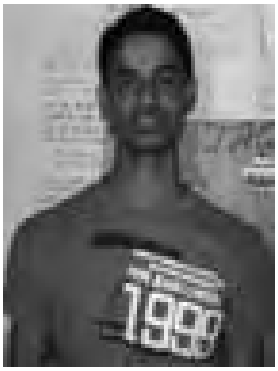

उम्र : 17 साल

शिक्षा : 9वीं मे पढ़ते है।

जाति : सेखर्देशी/दर्जी

पता : मकान नं. -422, फेस डी/2, जे.जे. कॉलोनी, मदनपुर खादर

अजरूद्दीन मूलतः अलीगढ़ ईलाके के रहने वाले है। यहाँ अपने अम्मी-अब्बा, चार भाईयों और एक छोटी बहन के साथ रहते है। अजरूद्दीन के अब्बा काम के सिलसिले में अपने परिवार के साथ यहाँ आकर बसे। अजरूद्दीन के दो बड़े भाई पिता के साथ ही किसी कम्पनी में सिलाई का काम करते है। छोटा भाई व बहन 9वीं में पढ़ते है। और एक बड़े भाई ने 5वीं करके पढ़ाई छोड़ दी और कुछ काम नहीं कर रहा।

मदनपुर खादर के बारे में अजरूद्दीन को जो बड़े समस्याएं लगती है वह है-गन्दगी, नशाखोरी और पानी-स्वास्थ्य आदि बुनियादी जरूरतों का अभाव। और समाज की सबसे बड़ी दिक्कत जिससे वो परेशान होते है वह है भारतीय समाज में जाति के नाम पर उँच-नीच।

स्वभाव से शर्मीलें अजरूद्दीन अपने आसपास किसी से ज्यादा बातचीत नहीं करते थे। स्कूल के अलावा

उनके पास काफी समय रहता था। अजरूद्दीन के इलाके में रहने वाले वेदप्रकाश ने उनको जागोरी के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

पहले अजरूद्दीन को लगता था कि लड़कियों से बात नहीं करनी चाहिए क्योंकि आसपास के लोग गलत समझेंगे। लेकिन जागोरी में युवाशक्ति समूह से जुड़ने पर मिटिंगों, रेडियों कार्यक्रम की कार्यशालाओं व नाटक तैयारी के दौरान अजरूद्दीन की दोस्ती लड़कियों से भी हुई। आज अजरूद्दीन का मानना है कि समाज का नजरिया हमेशा सही नहीं होता इसलिए सही गलत तय करने के लिए भेड़चाल न चलकर अपने विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए।

अजरूद्दीन अपनी समझ में आज तो बड़ा बदलाव देखते हैं वह है औरत की दुनिया घर की चार दिवारी तक सीमित नहीं होनी चाहिए उसके बारे में उनका कहना है परम्परा चली आ रही है कि औरते घर का काम देखेगी और मर्द वंश चलाएगे, कमाऐंगे। मर्द कहीं भी चले जाते है और औरतों को बाहर कम निकलने दिया जाता है। यह गलत है, उनका भी हक है कहीं भी जाए, उन्हें रोका न जाए। आदमी और औरत दोनों को बाहर जाकर कमाना चाहिए।

अजरूद्दीन के आसपास समस्याएँ तो पहले भी वही थी जो आजकल है, पर अब उनके पास उन्हें देखने और समझने का नजरिया आ गया है जिसे वो अपने आने वाली जिन्दगी के लिए महत्वपूर्ण मानते है।

अजरूद्दीन अपने परिवार व बहन के लिए चाहते है कि वह अच्छे इंसान बने। खुब पढ़लिखकर बिना भेदभाव के अपनी जिन्दगी बनाए।

खुद अजरूद्दीन कप्यूटर सीखकर अपना मोबाइल रिपेयरिंग का काम शुरू करना चाहते है जिसके लिए उनकी गुजारिश है कि मदनपुर खादर जैसे इलाके में रहने वाले युवाओं के लिए, तकनीकी ट्रैनिंग के सेन्टर चलाए जाए। ताकि उन्हें भी अपनी आर्थिक सुदृढ़ता के अवसर मिलें।

राधा

उम्र : 16 साल

शिक्षा : आर्ट्स विषय से 11 वीं की पढ़ाई कर रही है।

पता : मकान नं. -1583, फेस-III, जे.जे.कॉलोनी, मदनपुर खादर

राधा के माता-पिता उत्तरप्रदेश के बस्ती जिला के रहने वाले है। दिल्ली की आर.के. पुरम की बस्ती को जब उजाड़ा कर मदनपुर खादर भेज गया, तब से राधा का परिवार यहाँ पर रह रहा है।

राधा के पिता जो पहले आर. के. पुरम में अपनी फलों की दुकान चलाते थे अब किसी निजी कोठी में सेक्योरिटी गार्ड की नौकरी करते है। माँ पिछले साल से ऑगनबाड़ी में बतौर हेल्पर काम करती है। बड़ी बहन दो साल से औखला की एक कम्पनी के अन्दर सेल्स डिपार्टमेन्ट में डिलीवरी का काम करती है। बड़ा भाई 12 वीं में और छोटा भाई 10वीं में पढ़ता है।

मदनपुर खादर के बारे में राधा को जो दिक्कतें महसूस होती है उसमें शौचालयों की अव्यवस्था और सड़कों पर पर्याप्त रोशनी की उपलब्धता न होना है। जिस वजह से महिलाओं/लड़कियों के साथ छेड़खानी ज्यादा होती है और रात में कहीं भी अकेले निकलने के डर लगता है।

राधा को अपने जीवन में लड़की होने की वजह से जो बातें सबसे ज्यादा कचोटती है वह है, घर में भाई कुछ काम नहीं करते और उन्हें यह समझाया जाता है कि घर का काम लड़कियों का है, लड़कों का नहीं। दूसरा समाज में लड़कियों को हाथ की कठपुतली समझा जाता है, उनकी मन की इच्छाएँ कोई नहीं समझता। राधा करती है कि पहले माँ बाप, भाई के ईशारे पर चलो फिर 18 साल के होते-होते शादी हो जाती है तब अपने घर का चुल्हा चौका संभालों, यही हमारी नियती बना रखी है।

राधा 3 साल पहले अपनी सहेलियों के जरिए जागोरी से जुड़ी। यहाँ पर से वह नियमित तौर पर किताबें ले जाती है, जिन्हें पढ़कर उन्हें यह महसूस हुआ कि स्त्री पुरुष के बीच गैर-बराबरी की जो घुटन वो अनुभव करती है वह दूसरों को भी होती है।

राधा को जागोरी का माहौल बहुत अच्छा लगता है, यहाँ सब बहुत ही अच्छे ढ़ग से बात करते है। यहाँ आकर राधा को अपने अन्दर जो सबसे बड़ा बदलाव नजर आता है उसके बारे में वह कहती है-पहले मैं कुछ बुरा लगने पर किसी से कुछ बोल नही पाती थी पर यहाँ पर अपनी बात खुलकर कहने के अवसरों की वजह से मुझमें एक खुलापन आया है, अब तो मैं घर में भी खुलकर बिना डर के कह देती हूँ कि जो मैं कह रही हूँ वह सही है।

राधा को दोस्तों के साथ खेलना और साइकिल चलाना बहुत पसन्द है। जागोरी द्वारा दी गई साइकिलों में से एक साइकिल उनके समूह के पास भी है। लेकिन राधा का कहना है कि माँ चलाने के लिए मना करती है और पार्क होने से भी दोस्तों के साथ नहीं खेल सकते क्योंकि घर से बड़े होने का ताना मिलता है। अपनी इच्छाएँ मारनी पड़ती है।

राधा के पिता भी जब पीते है तो माँ के साथ हिंसा करते है। राधा का मानना है कि मर्द औरतों पर हाथ उठाकर/हिंसा करके अपनी मर्दानगी दिखाते है। चाहे पुरुषों की बात गलत ही क्यों न हो पर उसे सही साबित करने के लिए वह अपनी मर्दानगी के इस 'गुण' का भरपूर इस्तेमाल करते है।

जागोरी के साथ जुड़कर मदनपुर खादर के युवाओं के बीच बनी एकता को राधा अपनी एक शक्ति के तौर पर देखती है। और बड़े गर्व से कहती है कि मुझे और मेरे दोस्तों को अगर कोई कुछ कहे (छेड़खानी करे) तो हममें से कोई चुप रहकर नहीं सुनता, हम सब उसको जवाब देते है। मुझे ये एकता अच्छी लगती है और मैं चाहती हूँ कि ऐसी एकता सबमें बने ताकि दुनिया को सुधारा जा सके।

राधा की दृढ़ इच्छा है नौकरी करने की, क्योंकि जब तक दूसरों पर निर्भर रहेंगे तो उनके तरीकों से चलना पड़ेगा। अपनी शर्तो पर जिन्दगी जीने के लिए राधा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने को मुख्य शर्त मानती है।

आरती

उम्र : 17 साल

शिक्षा : 10वीं कक्षा में पढ़ रही है

जाति : बैरवा

पता : मकान नं. 603, ब्लॉक-बी, जे.जे. कॉलोनी, मदनपुर खादर

आरती का परिवार राजस्थान के भोपर जिला का रहने वाला है। आरती अपनी माँ, दो बहने और भाई-भाभी के साथ मदनपुर खादर में रहती है। इससे पहले वह लोग नेहरू प्लेस में रहते थे। पिता का छः साल पहले लम्बी बीमारी के बाद देहान्त हो गया वह मजदूरी करते थे।

आरती की माँ पिछले 4 साल से एक एक्सपोर्ट कम्पनी में नौकरी करती है, उससे पहले वह घरेलू कामगार थी। 25 साल का बड़ा भाई कपड़े की एक दुकान में हेल्पर (सहायक) का काम करती हैं भाभी घर पर ही सिलाई का व ब्युटीपार्लर का काम करती है। सबसे बड़ी बहन की छोटी उम्र में

ही शादी हो गई थी। आरती से बड़ी बहन ने दसवीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी और वह ब्युटीशियन का कोर्स करना चाहती थी, लेकिन पैसों की कमी की वजह से और भाई के उसे दूर न भेजने के निर्णय के कारण वह कोर्स नहीं कर पा रही।

आरती भी औरों की तरह अपनी सहेलियों के जरिए जागोरी से रूबरू हुई। जब आरती पहली बार जागोरी आई तब वहाँ एक मिटिंग चल रही थी। जिसमें लड़कियों के लिए शिक्षा के महत्व पर चर्चा हो रही थी। आरती उस चर्चा से काफी प्रभावित हुई। वह पिछले दस महीने से जागोरी के युवाशक्ति समुह से जुड़ी हुई है। अपने आसपास के महौल में आरती को जिस बात पर सबसे ज्यादा नफ़रत होती है वह है, लड़के और लड़कियों में भेदभाव किया जाना। आरती कहती है-हम कहीं भी जाए कुछ भी पहने तो सब रोकते-टोकते है, लेकिन लड़कों को कोई नहीं रोकता। जागोरी की यही बात आरती को बहुत पंसद है कि यहां लड़कियों को लड़कों से कम नहीं समझा जाता, और भेदभाव नहीं होता।

आरती ने पिछले 10 महीनों में युवाशक्ति समुह के साथ जुड़कर, अपने इलाके की समस्याओं पर बहुत से कामों का बीड़ा उठाया। समुह के साथ मिलकर सफाई के मुद्दे पर एक नाटक तैयार करके उसे जगह-जगह प्रदर्शित किया और चर्चाएँ की। अभी आरती और उसके साथी एक नाटक तैयार कर रहे है समाज की पित्तृसत्तात्मक सोच के खिलाफ। आरती को नाटक और सुरक्षा ऑडिट में सबसे ज्यादा मजा आता है। क्योंकि उसमें लोगों से सीधे रूबरू होने व सवाल खड़े करने का मौका मिलता है, और बदलाव का रास्ता बनता है। इस छोटी सी समयावधि में आरती अपने अन्दर जो सबसे बड़ा बदलाव देखती है वह है उनके अन्दर कही भी जाने की हिम्मत व आत्मविश्वास का बढ़ना।

आरती बताती है-पहले कहीं भी अकेले जाने से डर लगता था कि कोई तानेबाजी करेगा या कुछ कहेगा पर अब नहीं लगता। एक बार मैं और मेरी एक सहेली कही जा रहे थे, एक आदमी हमारा पीछा करने लगा, मेरी सहेली डर गई पर मैंने उस आदमी को खूब डांटा फिर वह शर्मिंदा होकर चला गया। आरती का मानना है यह आत्मविश्वास जागोरी के युवाशक्ति समुह में होने वाली चर्चाओं व वहाँ मिलकर किए जाने वाले कामों से बना है।

आरती को कॉलेज जाकर पढ़ने की इच्छा है, पर साथ ही एक डर है कि उन्हें आगे पढ़ाएगें या नही। आरती राजस्थानी समाज से है और वहाँ लड़कियों की जल्दी शादी कर दी जाती है। छोटी सी भी गलती हो तो तुरन्त कहते है शादी कर दो। लेकिन आरती कम्पुयटर सीखकर एक अच्छी नौकरी करना चाहती है और अपनी माँ की जिम्मेदारियों में हाथ बंटाना चाहती है। आरती का कहना है कि बड़े घर की लड़किया नौकरी कर सकती है तो हम क्यों नहीं कर सकते। लड़कियों को घर से बाहर जाना चाहिए-बाहर जाएगी तो जानेगी कि दुनिया में क्या हो रहा है।

संजय

उम्र : 18 साल

शिक्षा : आर्ट्स से 12वीं कक्षा की पढ़ाई कर रहे है

जाति : ओहली

पता : डी/2, 77, जे.जे कॉलोनी मदनपुर खादर

संजय बचपन से ही अपने नाना-नानी के साथ रहे है। अब मदनपुर खादर में संजय और उनका बड़ा भाई अपने मामा के परिवार के साथ रहता है। संजय के माता-पिता गुजरात में रहते है। अपने मामा-मामी को ही संजय अपने माता-पिता मानते है। भाई ओखला में बुकबांइडर की नौकरी करता है।

संजय के मामा का बेटा वेदप्रकाश जागोरी से पहले से ही जुड़ा हुआ था। संजय स्कूल से आकर घर पर ही अकेले रहते थे किसी से ज्यादा बातचीत नहीं करते थे। तब उन्होंने संजय को बताया की समय के सदुपयोग करने के लिए जागोरी के साथ जुड़ो, यहाँ अपने को सशक्त करने की समझ बढ़ती है, और जागोरी अपने इलाके के युवाओं के विकास के लिए कई कार्यक्रम करता है।

संजय को शिक्षा और व्यवहारिक दुनिया में एक अर्न्तविरोध नजर आता है। संजय कहते है कि किताबों में जो बाते है जैसे अपने आसपास साफ-सफाई, दूसरों की इज्जत करना, समाज में सबके लिए बुनियादी जरूरतें होना वह हमें अपने इलाके में नहीं नजर आती। लोग कहीं भी कुड़ा फैंक देते है, पार्क गन्दे है, लड़के ठीक से व्यवहार नहीं करते, सड़के खराब है शौचालयों की व्यवस्था ठीक से नहीं है, एक ब्लॉक में तीन शौचालय है, पर काम एक ही करता है, पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था नहीं है।

संजय कहने है कि लड़कियों पर तानेबाजी व छेड़छाड़ उन्हें पहले भी पसन्द नहीं थी लेकिन दोस्तों के दबाव में उन्हें कई बार यह सब करना पड़ता था अगर न छेड़ो तो दोस्त मर्दानगी के ताने देकर नरवस/करते थे। लेकिन जागोरी आने के बाद ऐसे दोस्तों के साथ रहना भी बन्द कर दिया.... और जाकर उन लड़कियों से भी माफी मांगी... जब से उन लड़कों का साथ छोड़ मेरे साथ सब ठीक ही हो रहा है।

पिछले 5-6 महीनों में जागोरी के साथ जुड़कर संजय ने सुरक्षा आडिट में बढ़चढ़ कर भाग लिया। जिसके दौरान उन्हें अपने खुद के अन्दर और समाज में पित्तसत्तात्मक विचारधरा की जड़ों को समझने का अवसर मिला।

पहले सिर्फ अपनी जिन्दगी में मस्त रहता था सुरक्षा ऑडिट के दौरान आसपास की समस्याओं को देखने के लिए दिमाग की आँखों को खोलकर देखना सीखा है-अब एक नजरिया बना है दूसरों की समस्याओं और समाज को देखने का।

संजय जागोरी के इस प्रयास की प्रंशसा करते है जहाँ मदनपुर खादर के युवाओं को मिलकर अपने इलाके की समस्याओं को समझने और उनपर काम करने के अवसर मिलते है। संजय मानते है कि हम किसी और को लाएगे पिफर वो किसी और को लाएगा, इस तरह एक सुरक्षित समाज का निर्माण होगा।

भविष्य में एमबीए करने की इच्छा रखने वाले संजय की गुजारिश है कि जागोरी या इस जैसे संस्थाएं बस्ती के युवाओं के आर्थिक सुदृढ़ीकरण के लिए भी काम करे। ताकि अच्छी समझ के साथ-साथ अपने भविष्य को सही दिशा में ले जाने के अवसर भी मिले।

संजय का सभी युवा पुरुष साथियों के लिए संदेश है कि बाहर यौनिक हिंसा करने से पहले अपने घर की महिलाओं के बारे में सोचे, आज हम यह करेंगे तो कल हमारे घर की महिलाओं के लिए बाहर असुरक्षा होगी, इसलिए अगर हम अपने और अपने परिवार के लिए सुरक्षित माहौल चाहते है तो उसकी जिम्मेदारी हमारी भी है।

ललिता

उम्र : 18 साल

शिक्षा : आर्ट्स से 12वीं कक्षा की पढ़ाई कर रही है

जाति : कैवट

पता : मकान नं. 1546, पफेस-3, जे.जे कालोनी, मदनपुर खादर

ललिता तीन बहनों, एक भाई और माता-पिता के साथ मदनपुर खादर के में रहती है। छोटे भाई बहन ग्यारहवी, सातवी और चौथी में पढ़ते हैं। बड़ी बहन जिसकी उम्र इक्कीस साल हैं की शादी हो गयी जिसका 3 साल पहले गौना हुआ है। ललिता की माँ प्रयन्त एन.जी.ओ. द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम में बच्चों की देखरेख करती है और उसी ऑफिस में उसके पिता रात को नाईट-गार्ड का काम करते है। इसके एवज में प्रयन्त दोनों को मिलाकर ढाई हजार के करीब देते हैं। यही उनकी घर की नियमित आय है। इसके अलावा उसके पिता अनियमित तौर पर निर्माण-मजदूर का काम करते है। ललिता का परिवार 2003 में आर.के.पुरम की झुग्गी बस्ती से उजाड़ कर यहाँ भेजा गया था।

हमेशा ही घर में रहने वाली और घर में सबसे ज्यादा झगड़ने वाली ललिता पहले कभी दूसरों के बारे में नहीं सोचती थी-कि उनकी क्या दिक्कतें है, पर आज वही ललिता दूसरों के झगड़े निपटाने व औरतों पर जहाँ हिंसा हो रही होती है वहाँ आगे

बढ़कर उनकी मदद करने जाती है। ललिता की बहन) तू जागोरी जाती थी और उसके कई बार कहने पर भी वह उसके साथ नहीं जाती थी। फिर एक दिन ललिता हमेशा की तरह अपने घर में सबसे झगड़ा कर रही थी तो) तू ने जागोरी से मधु को आकर बताया। मधु ने जाकर ललिता से बात की और उसके जागोरी के सेंटर में आने के लिए कहा। 2008 से ललिता ने जागोरी आना शुरू कर दिया। जागोरी के विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में मदद करने वाली ललिता अपनी बस्ती में युवा समूह बनाती है और निगरानी करने के कामों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती है। चाहे मदनपुर खादर की जे. जे. कालोनी हो या वहां से बाहर की दुनिया, ललिता का कहना हैं जहाँ जाओ लड़के-ही-लड़के झुण्ड बनाकर रास्तें में खड़े दिखते है, और लड़कियाँ घर के कामों में लगी रहती है और घुटती रहती है। बाहर की दुनिया उनके लिए नहीं है। पहले खुद के चिढ़चिढ़ें स्वभाव की वजह भी इसी घुटन में थी जो ललिता को अभी नजर आती है। वह पहले लड़कों से बात करने में हिचकिचाती थी लगता था कुछ गलत कर रहे है, लोग और घरवाले क्या सोचेंगे, लड़का और लड़की दोस्त भी हो सकते है ये समझ नहीं थी। आज ललिता न सिर्फ लड़कों से बेझिझक बात कर लेती है बल्कि अपने युवा समूह में लड़को के साथ मिलकर काम भी करती है।

आज ललिता मदनपुर खादर में महिला-हिंसा के खिलाफ अग्रणी भूमिका निभा रही है। रात व दिन में होने वाले सुरक्षा ऑडिट में खुद तो भाग लिया ही साथ ही अपनी बस्ती के अन्य युवाओं से इसमें शामिल होने के लिए बात की। ललिता का कहना है कि हमारी जागोरी किसी के भी साथ हिंसा होती हैं तो उसकी मदद करती है और पुरुषों को हिंसा करने से रोकती है।

ललिता का मानना है की उसने नजरिए में सकारात्मक बदलाव आया है। जहाँ पहले वो अपनी पढ़ाई छोड़कर घर में बैठ गई थी, उसे ही अपनी दुनिया समझती, और दूसरों के साथ क्या हो रहा है उससे कोई लेना देना नहीं था वही आज उन्हें लगता है जिंदगी घर की चारदीवारी से बाहर भी है, उन्हें आगे बढ़कर अपने पैरो पर खड़ा होना है। आज ललिता जागोरी के साथ जुड़कर एक कार्यकर्त्ता के तौर पर काम कर रही है, उन्हे जागोरी से स्कॉलरशिप मिलता है जिससे वह अपनी पढ़ाई जारी रख रही है। ललिता की सोच यह है की न तो खुद हिंसा सहनी है न ही दूसरो पर हिंसा होते देख चुप रहना है। ललिता का मानना है कि लड़कियों को घर से बाहर निकल कर दुनिया देखनी चाहिए। स्त्री पुरुष के बारे में इस समाज की मानसिकता को बदलने की जरुरत है, उसके लिए पुरुषों को बदलने की जरुरत सबसे ज्यादा है। कही भी जाओ तो यह आम बात है कि पुरुष छेड़खानी करते है और भद्दा मज़ाक करना अपना अधिकार समझते हैं। अगर पुरुषों की सोच बदले तो पूरी दुनिया सुरक्षित हो जाए। ललिता चाहती हैं कि जागोरी मदनपुर खादर की लड़कियों को कोई कोर्स करायें ताकि लड़कियाँ आगे बढ़ सकें, अपनी पैरों पर खड़ी हो सकें जिससे आगे चलकर वे किसी पर भी निर्भर न हों।

वीरू

उम्र : 16 साल

शिक्षा : कक्षा 9वीं में पढ़ रही है।

जाति :

पता : मदनपुर खादर के जे.जे कालोनी

माता-पिता मध्यप्रदेश से आकर सरोजनीनगर में बसे, जहाँ से उजाड़ कर उन लोगों को मदनपुर खादर भेज दिया गया। वीरू के पिता आजकल बेरोजगार है। पहले पृथ्वीराज रोड पर एक एम्बेसी में एक ठेकेदार के तहत माली का काम करते थे। माँ मुख्यतः घर के काम की जिम्मेदारी निभाती है। पहले जब सरोजनीनगर रहते थे तब वह भी बतौर घरेलु कामगार करती थी। बड़ा भाई नेहरूप्लेस में एक ऑफिस में फोन ओपरेटर का काम करता है। वीरू खुद पढ़ाई के साथ-साथ स्कूल से छुट्टी वाले दिनों में शादी-पार्टियों में काम मिलने से, डेकोरेशन का काम करते हैं जिसकी एवज में 150 रूपए एक दिन में मिलते हैं। इन पैसों को वो अपनी कॉपी किताब या अन्य जरूरतों के लिए संभाल कर रखते है।

वीरू पिछले ढाई तीन साल से जागोरी के मदनपुर खादर के सेंटर से जुड़े है, इस जुड़ाव की शुरुआत कंप्युटर सीखने से हुई। वीरू के दोस्तों ने बताया कि जागोरी युवाओं को कंप्यूटर सिखाता है तो वो यहाँ आये, लेकिन धीरे-धीरे वह यहां होने वाली मीटिंगो और चर्चाओं में भाग लेने लगे। रेडियो कार्यक्रमों, सुरक्षा ऑडिट, साप्ताहिक मिटिंग में हुई चर्चाओं की वजह से वीरू अपनी सोच में काफी बदलाव महसूस करते है।

पहले महिलाओं के मुद्दों के बारे में वो कोई सरोकार नहीं रखते थे पर आज उनका कहना है कि हमको समझना चाहिए कि हमारे घरों में माँ-बहनों का भी बराबर का हक है और वो उनको मिलना चाहिए। वीरू कि बहन के वैवाहिक जीवन में जब समस्याएँ आई तो वीरू आगे बढ़कर बहन के साथ खड़े हुए। वीरू का मानना है कि अगर लोग एकजुट होकर खड़े हो तो समस्याएँ हल हो जाती है। वीरू अपने घर के कामों में माँ कि मदद करते है। महिलाओं के साथ होने वाली यौनिक व घरेलु हिंसा का विरोध करने वाले वीरू अपने घर व आसपास ऐसा माहौल तैयार करना चाहते है जहाँ सब बिना डर व बराबरी के साथ जी सकें।

वीरू की जागोरी से गुजारिश है कि वह आगे भी ऐसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए जिनसे हम कुछ सीखने के बाद आगे बढ़ सकें।

रवि

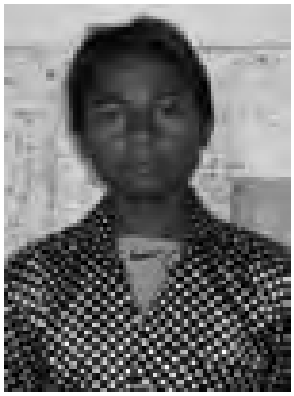

उम्र : 17 साल

शिक्षा : कॉमर्स से 11वीं की पढ़ाई कर रहे है।

जाति : कुर्मी

पता : प्लाट नंबर 600, डी-ब्लाक, फेस-2, जे.जे. कॉलोनी, मदनपुर खादर

रवि के माता-पिता बिहार के दरभंगा जिले के रहने वाले है। काम के सिलसिले में दिल्ली के अलखनन्दा इलाके की झुग्गीबस्ती में आ कर बसे जहाँ से हटाकर उन्हें मदनपुर खादर में भेज दिया गया। पिछले छः सालों से रवि आपने माता-पिता, तीन भाईयों और एक भाभी के साथ यहाँ पर रहता है। रवि की माँ और भाभी घर का काम संभालती है। पिता जो पहले महाराज (रसोइया) थे पिछले 5 सालों से दमे की बीमारी के बढ़ने की वजह से बेरोजगार है और घर पर ही रहते है। बड़ा भाई मज़दूरी करता है। रवि के घर की कोई नियमित आमदनी नहीं है।

रवि जुलाई में जागोरी के साथ जुड़े। रवि के दोस्ते वेदप्रकाश ने जागोरी के बारे में उनको बताया की यहाँ समाज की जागरूकता का काम होता है, साथ ही रवि को यहाँ आने के लिए कहा। रवि अन्य युवाओं के साथ मिलकर एक नाटक तैयार कर रहे है, उन्हें यहाँ पर होने वाली चर्चाएँ बहुत अच्छी लगती है। इस छोटे से समय में ही रवि जिन मुद्दों को लेकर अपनी सोच में बदलाव देखते है, वह है लड़कियों के साथ होने वाली छेड़छाड़। इस बारे में उनका कहना है कि उन्हें नहीं लगता था कि इससे लड़कियों को बुरा लगता है, पर चर्चाओं के बीच पता चला कि जिसे लड़के अपने मजे के लिए खेल समझते है उससे दूसरों को कितना दुख पहुँच सकती है। लड़को द्वारा छेड़खानी करने के पीछे की मानसिकता के बारे में रवि बताते है कि इससे लड़को को दोस्तों के बीच मर्दानगी दिखाने का गर्व महसूस होता है-कि वह किसी भी लड़की को कुछ भी बोल सकते है और वो आगे से उसे कुछ नहीं कह सकती।

रवि आज इसे गलत मानते है और इसे एक नुकसान की तरह देखते है। आज अगर हम करेंगे तो कल हमारी बहु-बेटियों के साथ होगा। रवि खुद लड़कियों के साथ छेड़खानी नहीं करते। न ही उन्हें दुसरों का ऐसा करना अच्छा लगता है। लेकिन उन्हे डर है कि वह दुसरों को जाकर रोकेंगे तो मारपीटाई होने का डर है। रवि अपने इलाके में गुण्डागर्दी नशाखोरी, हिंसा, गंदगी और बेरोजगार को मुख्य समस्याओं के तौर पर देखते है। इस समस्याओं के बारे में रवि कहते है-यहाँ से काम के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है आदमी जहाँ ढाई-तीन हजार कमाते है उसमें से 6-7 सौ किराए में चला जाता है और बाकि में से ज्यादातर का नशा कर लेते है।

रवि को अब लड़कियों से बात करने में उतनी हिचकिचाहट महसूस नहीं होती, लेकिन वह जितने स्वतंत्र रूप से लड़कों से बात करते है उतना लड़कियों से नहीं कर सकते। क्योंकि उन्हें लगता है लड़कियों से बात करने के लिए कुछ भाषा का विशेष रूप से रखना पड़ता है और वह सही भी है।

रवि पहले आसपास क्या हो रहा है इसमें ज्यादा ध्यान देते थे अपने में ही मग्न रहते थे। अब आसपास की समस्याओं को देखने व समझने की बेहतर समझ विकसित हुई है कॉमनवेल्थ गेम्स के बारे में रवि का कहना है कि सरकार सिर्फ अपने फायदे और इज्जत के लिए कॉमनवेल्थ गेम्स ला रही है, इसको दिल्ली लाने की क्या जरूरत थी? शहर को इतना सजाने की क्या जरूरत थी? वो भी गरीबों का नुकसान करके। अगर उन्हें शर्म आती है तो सही से यह सब क्यों नहीं करते। सिर्फ अपनी फायदे के लिए इतनी मंहगाई कर दी है, लोगों को खाना भी खाने को नहीं मिल रहा, अगर पैसा है तो पहले यहां की समस्याएँ क्यों नहीं हल करते।

रवि भविष्य में एक अच्छा 'पुलिस वाला' (पुलिस अपफसर) बनना चाहते है क्योंकि उनका मानना है कि पुलिस में बहुत भ्रष्टाचार है इसलिए वह एक अच्छा पुलिस अफसर बनकर अन्य भ्रष्ट पुलिसवालों को भी सुधारेगी और समाज को भी सुधारेगें। रवि समाज को बदलने के लिए सरकार की सोच के बदलने की जरूरत महसूस करते है। रवि जागोरी से उम्मीद करते है कि वो युवाओं के सशक्तिकरण के लिए कुछ तकनीकी कोर्स भी शुरू करे।

सिमरन

उम्र : 15 साल

शिक्षा : 9 वीं कक्षा में पढ़ती है।

जाति : सिंह

पता : मकान नं. 1452, फेस-III, जे. जे. कॉलोनी, मदनपुर खादर

माता-पिता व छोटे भाई साहिल के साथ रहती है। सिमरन के पिता ऑटो चलाते है और माँ घर के कामों की जिम्मेदारी निभाती है।

सिमरन के दादाजी नेपाल से आकर सफदरजंग में बसे। वहीं पर उनके पिता पले बढ़े और सिमरन का जन्म भी वहीं हुआ। दिल्ली के सौन्दर्यकरण के चलते सिमरन के परिवार को वहाँ से उजाड़कर मदनपुर खादर भेज दिया गया।

सिमरन जागोरी के युवाशक्ति समुह से तकरीबन ढाई साल पहले जुड़ी थी। स्कूल की सहेली अनीता ने

सिमरन को जागोरी के बारे में बताया। शुरूआत में सिमरन सिर्फ किताबे लेने के लिए जागोरी सेन्टर की लाइब्रेरी आती थी, लेकिन धीरे-धीरे अपने इलाके की समस्याओं को समझने और दूर करने के लिए दीवार पत्रिका, रेडियों कार्यक्रमों, सुरक्षा ऑडेट आदि गतिविधियों में भागीदारी निभाना शुरू किया। आज सिमरन जागोरी द्वारा महिला मुद्दों पर शहर में किए जाने वाले धरनों तथा अन्य गतिविधियों तक में शामिल होती है।

सिमरन का मानना है कि महिलाओं पर हिंसा और उसमें भी तानेबाजी करना व उन्हें घूरना, छेड़ना ऐसी समस्याएँ है, जिन्हें वह हर जगह महसूस करती हैं। अपने इलाके में तो इसे और भी तीखे रूप में महसूस करती है।

सिमरन को इलाके में बड़ी समस्या के तौर पर जो दिखता है, इसमें पुरुषों द्वारा महिलाओं के प्रति भद्दी व अभद्र भाषा का प्रयोग किया जाता है और लड़कियों के बाहर खेलने व निकलने पर रोकटोक लगाई जाती है।

जागोरी के युवाशक्ति समुह में लड़कों को भी शामिल करने के निर्णय को सिमरन सकारात्मक कदम मानती है। इस प्रयास के चलते एक ऐसी प्रक्रिया चली और माहौल बना जिसमें वह उनसे बातचीत कर सके। साथ ही वह यह बात उन तक पहुँचा सकी कि मर्दानगी दिखाने के लिए वह जो यौनिक हिंसा करते है उसका लड़कियों की जिन्दगी पर क्या असर पड़ता है।

लड़के जिस छेड़छाड़/यौनिक हिंसा को वह प्रेम समझते है वह लड़कियों को कितना बुरा लगता है। सिमरन ये मानती है कि जो लड़के युवाशक्ति समुह के साथ जुड़े है कम से कम वह सब तो अब यौनिक हिंसा नहीं करते। सिमरन को ऐसे पुरुष पसन्द हैं जिनके साथ बिना डर के वह सहज महसूस कर सकें और हमेशा लड़की होने की सतर्कता न बर्तनी पड़े।

सिमरन जागोरी के साथ बने रिश्ते से अपने अन्दर जो बड़ा बदलाव देखती हैं उसके बारे में कहती है कि मैं आत्मनिर्भर हुई हूँ। मुझे बातों को सुनना, समझना और बोलना आ गया है। अपने लिए खुद लड़ाई लड़ने की हिम्मत आ गई है। सिमरन मानती है कि दो साल पहले महिला हिंसा पर उनकी कोई समझ नहीं थी। घर पर पिता द्वारा माँ की पिटाई होने पर समझ नहीं आता था कि क्या करे। लेकिन आज अगर पिता शराब पीकर माँ पर हिंसा करते है तो सिमरन बीच में आ जाती है और पिता को एक तरफ धकेलकर, उन्हें माँ पर हिंसा करने से रोकती है।

सिमरन भविष्य में किसी बड़ी कम्पनी में मैनेजर या बड़े होटल में शैफ बनकर अपना मकान खरीदना चाहती है, जिसमें वह अपने माता-पिता के साथ रहेगी। सिमरन चाहती है कि जागोरी उन्हें अलग-अलग जगहों पर लेकर जाए ताकि उन्हें बाहर के अनुभवों से भी जानने व सीखने को मिले।

रेखा

उम्र : 19 साल

शिक्षा : पत्राचार से 12वीं कर रही है।

रेखा अपनी माँ व बड़े भाई जो कि 12वीं में पढ़ रहा है के साथ मदनपुर खादर में रहती है। रेखा ने पिता के देहान्त होने पर छटी कक्षा में ही पढ़ाई छोड़ दी थी। पिछले पाँच सालों से जागोरी के युवाशक्ति समुह की सदस्य रेखा ने फिर से अपनी पढ़ाई शुरू की। पिछले साल पत्राचार से दसवीं पास करके अब बाहरवीं की परिक्षाओं की तैयारी कर रही है। घर का खर्च उनके पिता की पेन्शन और माँ द्वारा बेलदारी करके कमाए पैसों से चलता है।

रेखा को अपने इलाके में चौराहों पर लड़कों के झुण्ड देखकर बहुत गुस्सा आता है। रेखा कहती है लड़के चौराहों पर बैठकर छेड़खानी करते रहते है, पर कोई उनको उल्टा जवाब नहीं देती, लड़कियाँ डरती हैं क्योंकि या तो लड़की खुद की बदनामी होगी या फिर वो बाद में और तंग करेंगे। रेखा जब पहले सेन्टर आती थी तो एक लड़का हमेशा उसे तंग करता था, तानाकशी करता था। एक दिन रेखा ने उसे ठीक से झाड़ लगाई तो उस दिन से उसने कभी तंग नहीं किया। रेखा कहती है अब मुझसे इलाके में कोई लड़का बदतमीजी नहीं करता क्योंकि उनको पता है कि मैं उल्टा जवाब दे दूँगी।

जागोरी के युवाशक्ति समुह से जुड़े लड़कों के बारे में रेखा की राय है कि वह सब बाकी लड़कों से ठीक है, उन्हें बाहर अब कभी लड़की छेड़ते हुए नहीं देखा।

अपनी माँ को बहुत प्यार करने वाली रेखा, कहीं भी अपनी माँ को बताए बिना नहीं जाती। लेकिन कही भी अकेले जाने से अब रेखा को डर नहीं लगता। इसकी वजह वह जागोरी के सेन्टर में होने वाली ट्रेनिंगों और चर्चाओं को मानती है। सेल्फ डिफेन्स/आत्मरक्षा की ट्रैनिगों और हिंसा पर हुई चर्चाओं के जरिए रेखा की यह समझ बनी है कि हिंसा को चुपचाप सहना हिंसा को और बढ़ावा देना है।

रेखा एक ऐसे समाज को बेहतर मानती है, जहाँ गरीब होने नीची जाति होने या औरत होने के वजह से किसी को हिंसा या गैर-बराबरी न झेलनी पड़े।

अपने भविष्य की तैयारियों में रेखा इंजीनियर या वकील बनना चाहती है। साथ ही यह भी सोचती हैं कि अपने घर या आसपास के लोगों को सामाजिक समस्याओं के प्रति वह जागरूक करने की कोशिश करेंगी ताकि घर व बाहर दोनों जगह औरतों को बराबरी व सम्मान मिल सके। महिलाओं की लड़ाई

के लिए रेखा का कहना है कि औरत अपनी लड़ाई नहीं लड़ पाती है क्योंकि अकेली पड़ जाती हैं। अगर कोई साथ दे तो लड़ने की हिम्मत आती है।

रेखा खुद को इस काम के लिए प्रस्तुत करते हुए कहती है कि अगर अपनी लड़ाई लड़ने में कोई महिला अकेला महसूस कर रही हैं तो उसके साथ कहीं भी आने जाने में मैं साथ दूँगी।

युवा और सुरक्षा
सेफ़्टी ऑडिट–2010

इलाके का नाम

दिंनाक

ब्लाकॅ व रूट का रास्ता

अवधि

उन व्यक्तियों के नाम जिन्होने ऑडिट में भाग लिया

सड़क	टिप्पणी व प्राप्त जानकारी
1. बिजली के पोल-काम कर रहें हैं, पूरी सड़क पर हैं, कितनी दूरी पर पोल हैं, मैप में दिखाएं जहां लाईट के पोल काम नही कर रहें	
2. सड़क मार्गदर्शक	
3. विकलांग लोगों के लिए रोड व अन्य सुविधा	
4. कूड़ेदान की सुविधा, क्या हालत व कितनी दूरी पर कूड़ेदान	
5. आपातकालीन फोन सुविधा, आस-पास का माहौल व लोग अनौपचारिक निगरानी (दुकानें, घर, ढ़ाबां, रेस्टोरेंट व ठेला आदि)	
6. कोई ऐसी जगह जहां से बचने का कोई रास्ता न हो	
7. कितने शौचालय हैं, कितने काम कर रहें हैं।	
8. सुरक्षा कर्मी मौजूद हैं।	
9. सड़को की हालत व फुटपाथ की हालत।	
10. कोई खाली प्लॉट व जो जगह बन रही है। किसलिए इस्तेमाल होते हैं?	
11. पार्क की हालत व संख्या।	

सड़क	टिप्पणी व प्राप्त जानकारी
12. पुलिसकर्मी व पी.सी.आर वैन दिखाई देते हैं या नही? कब दिखाई देते हैं?	
13. क्या सड़को पर लोग दिखते हैं कितने पुरुष व कितनी महिलाएं व कारण।	
14. किसी समूह व कोई चीज से महिलाओं व लड़कियों को असुरक्षा लगती हो।	
15. क्या बच्चे या युवा वर्ग सड़क पर खेलते हैं..... किस उम्र के कौन खेलते हैं-लड़की या लड़के।	
16. क्या इस जगह में खुले स्थान हैं, कितने हैं? उनका इस्तेमाल कौन करता है, किस के लिए इस्तेमाल होता है। (नशा, जुआ व अन्य)	
17. यातायात के साधनों की उपलब्धता, किस के द्वारा व व्यवहार (चालकों का व्यवहार)	
18. महिलाओं को यातायात के साधनों में सुरक्षित माहौल मिलता है? नही तो क्यों, व हाँ तो क्यों	
19. पार्किंग की जगह, सुरक्षित, लाईट की व्यवस्था।	
20. मार्केट की जगह, सुरक्षित, लाईट की व्यवस्था।	
21. मार्केट का माहौल, दुकानों के खुलने व बन्द होने का समय इस मार्केट को इस्तेमाल करने वाले कौन लोग व समय	
22. बस स्टॉप कितने, लाईट हैं या नही, रात में कितना मिलती है व किस समय	

UN HABITAT
FOR A BETTER URBAN FUTURE